@poorvanews facebook.com/poorvanews

पूर्वांचल की सामाजिक आर्थिक साप्ताहिकी

पूर्वापोस्ट

₹5 मूल्य

दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी और गोरखपुर में प्रसारित poorvapost.in

वर्ष 4 | अंक 26 | पृष्ठ 16 | 20-26 अगस्त 2019, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए यूपी सरकार लगातार प्रयत्नशील : केशव प्रसाद मौर्य

देखें पृष्ठ 2 पर

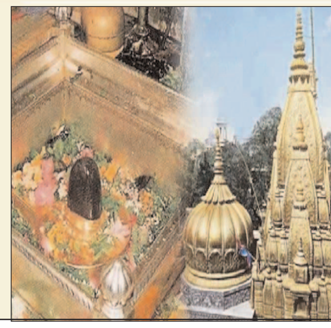

काशी विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह में श्रद्धालुओं के प्रवेश पर स्थायी रोक, बाहर से जलाभिषेक

देखें पृष्ठ 4 पर

सर्वोच्च आदर्श शिक्षक से सम्मानित डॉ दयानन्द तिवारी पूर्वांचल की शान हैं

देखें पृष्ठ 7 पर

सड़क निर्माण के रास्ते समाज निर्माण के संकल्प पथ पर भाजपा सरकार

पिछले दो सालों में उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग ने सड़कों को मायाजाल से निकालकर एक बेहतर कल की तरफ जाने वाला रास्ता बना दिया है. कैसे ये हम आपको सिलसिलेवार बताएंगे

स्पेशल रिपोर्ट पृष्ठ 8-9 पर एवं साक्षात्कार पेज 3 पर

योगी ने कहा- अच्छा काम करूंगा तो लोग याद करेंगे, यही फार्मूला अधिकारियों पर भी लागू

प्रांतीय सिविल सेवा संघ के अधिवेशन में योगी ने अधिकारियों को दी नसीहत

पूर्वापोस्ट संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रांतीय सिविल सेवा के सामान्य अधिवेशन का शुभारम्भ किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि रोज मुझे सीएम नहीं रहना है, लेकिन अगर मैं अच्छा काम करूंगा तो ये यादगार हो जाएगा। यही बात अधिकारी के कार्य पर भी लागू होता है।

योगी ने कहा कि एक कॉमन मैन के साथ आपका जुड़ाव है। इसको परोपकार का कार्य मानकर आप घंटो काम करेंगे तब जाकर आपको खुशी मिलेगी।

उत्तर प्रदेश प्रांतीय सिविल सेवा (प्रोन्नत अधिकारी) संघ का सामान्य अधिवेशन- 2019 के इस अधिवेशन का पहली बार शुभारंभ किया। योगी ने अधिकारियों व कर्मचारियों से सख्त लहजे में कहा कि इंसान होकर अगर आप इंसानियत के लिए काम नही करेंगे। ये नहीं होना चाहिए। आपकी ड्यूटी 9.30 बजे की है लेकिन कुछ लोग 11 बजे तक नही पहुंचते है। अगर ऊपर से दवाब न हो तो 12 बजे तक नही पहुंचते हैं। कुछ लोग कैम्प कार्यलय बना कर गप्पे मारते हैं। योगी ने कहा कि जब सरकार आपकी बात को बिना किसी शर्त के आगे बढ़ा रही है तो आपका भी फ़र्ज़ बनता है कि कार्य को अच्छे से आगे बढ़ाइए।

प्रजेंटेशन के माध्यम से अपने बेहतर कार्यो को प्रस्तुत करें। विभिन्न संवर्गो के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने जनता की समस्या को सुनने और निस्तारण को लेकर सीएम हेल्पलाइन और आईजी आर एस बनाया लेकिन अक्सर उसे बिना निस्तारण के लिए कह दिया जाता था कि निस्तारण हो गया। हमने इसमे सुधार करवाया। जनता हमारे कार्य से अगर खुश नहीं है तो हम अच्छा काम नहीं कर रहे है ये मानना पड़ेगा।

बोले- कुछ लोग हैं जो समय से कार्यालय नहीं पहुंचते हैं, कैंप कार्यालय में गप्पे मारते हैं

खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए यूपी सरकार लगातार प्रयत्नशील : केशव प्रसाद मौर्य

पूर्वापोस्ट संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के कुशल दिशा निर्देशन में राज्य में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अनेक उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में अपार सम्भावनाओं के दृष्टिगत सरकार द्वारा कई महत्वाकांक्षी एवं जनोपयोगी योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के प्रयास से मुख्यमन्त्री जी के नेतृत्व में प्रदेश के मंत्री परिषद द्वारा निजी क्षेत्र से अधिक से अधिक निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2017 में संशोधन भी पिछले माह मे किया गया है।

संशोधन के अनुसार खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करने वाली इकाईयों को पांच वर्ष की मण्डी शुल्क की छूट की सीमा को बढ़ाकर दस वर्ष किया गया है। मण्डी शुल्क की पांच वर्ष छूट की सीमा के पश्चात आगामी पांच वर्ष के लिए उत्तर प्रदेश औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति-2017 के प्रस्तर-5.3 (डी.) के अन्तर्गत एस0जी0एस0टी0 के लिए प्रतिपूर्ति की निर्धारित सीमा एवं व्यवस्था के अनुसार योजनान्तर्गत अनुमन्य वर्ष में मण्डी शुल्क एवं एस0जी0एस0टी0 के रूप में जमा की गयी धनराशि की आगामी पांच वर्ष तक प्रतिपूर्ति की जायेगी।

उ0प्र0 खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2017 के अन्तर्गत वेब पोर्टल पर लगभग 242 आनलाईन आवेदन पंजीकृत हुए हैं, जिनमें 1240 करोड़ का पूंजी निवेश एवं 20838 प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन की सम्भावना है। 242 आवेदनों में से पूंजीगत उपादान के 130, पूंजीगत उपादान (पी0एम0एस0एस0वाई0) के 18, ब्याज उपादान के 82, रीफर व्हीकिल के 07, बाजार विकास के 01 तथा बैंकेबुल प्रोजेक्ट के 4 आवेदन शामिल हैं।

आनलाईन वेब पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों को राज्य सरकार की राज्य स्तरीय इम्पावर्ड समिति (एस0एल0ई0सी0) द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती है। अब तक एस0एल0ई0सी0 की चार बैठकें हो चुकी हैं। प्रथम बैठक में 11 परियोजनाएं (रू0 34 करोड़), द्वितीय बैठक में 27 परियोजनाएं (रू0 60 करोड़), तृतीय बैठक में 14 परियोजनाएं (रू0 64.13 करोड़) तथा चतुर्थ बैठक मे 45 परियोजनाओं (रू0 218 करोड़) को स्वीकृत किया गया है। ?

उद्यान निदेशक के अनुसार ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरिमनी में सबसे ज्यादा संख्या में परियोजनाएं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र से हैं, जो स्वयं में स्पष्ट करता है कि प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करने की प्रबल सम्भावना विद्यमान है। ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरिमनी-1 में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की 14 परियोजनायें जिनमें लगभग 3550 करोड़ का पूंजी निवेश प्रस्तावित था, वर्तमान में या तो वाणिज्यिक उत्पादन में हैं अथवा शीघ्र ही वाणिज्यिक उत्पादन में आने वाले हैं।

ग्राउण्ड ब्रेकिंग के द्वितीय चरण में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापना की 41 परियोजनायें हैं, जिनमें 3064.55 करोड़ का पूंजी निवेश होगा। 18 परियोजनायें में लगभग 2000 करोड़ का पूंजी निवेश है, जो चीनी मिल, दुग्ध तथा एग्रो प्रासेसिंग से सम्बन्धित है।

इन इकाईयों के माध्यम से प्रदेश में फल सब्जी, खाद्यान्न, तिलहन एवं दलहन से जुड़े विविध उत्पादों का उत्पादन किया जायेगा। यह इकाईयां प्रदेश के पश्चिमी भू-भाग, मध्य भू-भाग, पूर्वांचल एवं बुन्देलखण्ड सभी क्षेत्र में स्थापित हो रही हैं। इससे प्रदेश में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो सकेंगे।

निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण एस बी शर्मा ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में उ0प्र0 खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2017 में निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से मण्डी शुल्क तथा एस0जी0एस0टी0 से सम्बन्धित संशोधन किया गया है और उद्यमियों का आह्वाहन किया गया है कि उद्यमी उत्तर प्रदेश में बड़ी मात्रा में निवेश हेतु आगे आयें। उनकी समस्त समस्याओं का समाधान प्रदेश सरकार द्वारा शीघ्रता से किया जायेगा।

उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगी भाजपा : डा. नीलकंठ तिवारी

पूर्वापोस्ट संवाददाता

प्रतापगढ़। सदर सीट पर होने वाले उपचुनाव को लेकर रविवार को शहर के अफीम कोठी में भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों ने बैठक की। इस दौरान उपचुनाव को लेकर रणनीति तैयार की गई। प्रदेश सरकार के मंत्री नीलकंठ तिवारी ने उपचुनाव को लेकर कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों से एकजुटता का आह्वान किया। कहा कि राज्य और केंद्र सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों को जनता तक पहुंचाएं। उपचुनाव के लिए कमर कस लें। भाजपा प्रदेश मंत्री शंकर गिरी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सबका साथ सबका विकास के मंत्र पर काम कर रही है। पीएम मोदी के नेतृत्व में विश्व में भारत की अलग छवि बनी है। हर तबका भाजपा के साथ है। उपचुनाव में भी भाजपा जीत का परचम लहराएगी।क्षेत्रीय अध्यक्ष महेश श्रीवास्तव कहा कि पार्टी कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी बूथ स्तर तक बैठक करके उपचुनाव की तैयारी करेंगे। योगी सरकार अपनी योजनाओं से शहर से लेकर गांव तक कार्य कर रही है। बैठक का संचालन जिला महामंत्री अशोक श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर जिला महामंत्री राजेश सिंह, मंडल अध्यक्ष रवींद्र पटेल, गिरीश पांडेय, विजय तिवारी, पूर्व जिलाध्यक्ष केके सिंह, अनिल प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक और संपादक **अवतंस कुमार चित्रांश** द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाउस, सी ब्लॉक, बारात घर के सामने, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर 22 जिला गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं चौड़ा, रघुनाथपुर, सेक्टर-22 नोएडा, गौतमबुद्ध नगर यूपी से प्रकाशित.
RNI NO. UPHIN/2016/66940 किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। **प्रबंध संपादक :** रौनक, **सीईओ :** अभय सिंह, **विधि सलाहकार :** शशांक शेखर त्रिपाठी (एडवोकेट), **ब्यूरो चीफ :** बिमलेंद्र राय पीटर info.poorva@gmail.com

उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री और लोक निर्माण विभाग के मुखिया केशव प्रसाद मौर्य जितने सरल और सहज हैं उतने बड़े सांगठनिक क्षमता के धनी हैं. बतौर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहते यूपी विधानसभा में पार्टी की सफलता रही हो या फिर योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार की लोकप्रिय नीतियों का क्रियान्वयन हो. केशव प्रसाद मौर्य हर मोर्चे पर कुछ नया लिख जाते हैं. प्रदेश में सड़क निर्माण के लिए जिम्मेदार लोक निर्माण विभाग भी केशव जी के सृजनात्मक नेतृत्व में सड़क को महज आवागमन का जरिया ना मानकर उसे समाज के साथ जोड़ने का कार्य कर रहा है.सरकार की विभिन्न जनप्रिय योजनाओं पर उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य से विशेष बातचीत करते पूर्वापोस्ट के प्रधान संपादक अवतंस चित्रांश

प्रतिभा को प्रोत्साहित, गांव व समाज को विकास से जोड़ने वाली सड़कों का निर्माण कर रही है प्रदेश सरकार : उपमुख्यमंत्री

प्रश्न - डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम गौरव पथ का विचार कहा से आया ?

उपमुख्यमंत्री - जब माननीय कल्याण सिंह जी की अगुवाई में जब उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी और राजनाथ सिंह जी शिक्षा मंत्री थे उस समय हम लोगों ने प्रयास किया कि उत्तर प्रदेश में नकल विहीन परीक्षा हो प्रतिभा पर आधारित हमारे बच्चे भाग ले उसी के क्रम में एक प्रतिभाशाली बच्चो का जो टॉपर बच्चे थे उनका एक कार्यक्रम था उस कार्यक्रम में मैं गया था मुझे बुलाया गया था तो मै पहले सोचकर विचार कर गया था कि ऐसा क्या किया जाये कि जो प्रतिभाशाली बच्चे है उनके अंदर और प्रतिभा दिखाने का उत्साह पैदा हो. तब हमने कहा कि यूपी बोर्ड के टॉपर होंगे उनके घर तक लोक निर्माण विभाग के माध्यम से हम सड़क बनाने का काम करेंगे और उस पथ का नाम रखेंगे डॉ ऐ पी जे अब्दुल कलाम गौरव पथ और उसका उद्घाटन और शिलान्यास उस बच्चे के हाथ से करायेंगे जिसकी वजह से सड़क का निर्माण हुआ.

प्रश्न - बच्चों या उनके गाँव या परिवार की तरफ से किस तरीके का रिस्पांस मिला ?

उपमुख्यमंत्री - बहुत जबरदस्त रिस्पांस मिला ये योजना घोषित हुई कार्यक्रम फ़ाइनल हो गया एक बच्चा मुझसे मिला कि मेरे घर तक की सड़क तो बनी हुई है मेरे स्कूल की सडक नही बनी हुई है तो आप मेरे स्कूल की सड़क बना सकते है क्या मेरे रिजल्ट के आधार पर, मैंने कहा बेटा जरुर बनायेंगे वो बदायूं जिले का बच्चा था फिर सड़क का निर्माण उसके स्कूल तक कराया गया. मैंने देखा कि बच्चों का पढने को लेकर और उत्साह पैदा हुआ और सरकार ने भी ऐसे कदम उठाये जिसके आधार पर नकल विहीन परीक्षा कराने की दिशा में हम आगे बढ़े. हम समझते है कि बिना कोई बल प्रयोग किये, बिना किसी प्रकार की शक्ति किये, किसी बच्चे को उत्पीड़त किये बिना नकल के बिना परीक्षा कराने में और बच्चों को पढाई कर पास होना है इस प्रकार की भावना जाग्रत करने में सफलता मिली.

गौरव पथ योजना की सफलता से हमें लगता है कि बच्चों में ही नहीं समाज में भी काफी उत्साह है. इसलिए हमने भविष्य में जो अलग अलग क्षेत्रो में भी प्रतिभाएं होंगी उनके घरों तक भी सड़क बनाने का निर्णय लिया है

प्रश्न - पंडित दीन दयाल जी का अन्त्योदय का आदर्श है ये आपको कैसे प्रेरित करता है?

उपमुख्यमंत्री - उसका कारण हैं. मैं एक दिन आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे मार्ग से होकर के हरदोई जा रहा था. जिसका अखिलेश यादव बहुत ढिंढोरा पीटते हैं. रास्ते में हरदोई जाते समय मैंने दाएं बाएं बहुत सारे गाँव देखे, लेकिन विडंबना देखिए किसी गांव में आने जाने के लिए एक्सप्रेस वे से जोड़ती कोई सड़क नहीं दिखी.मैं एक गाँव वाला हूँ गरीब परिवार से निकल कर आया हूँ तो मुझे लगता है कि गाँव का आदमी यही सोचेगा कि ये तो बड़े लोगों के लिए बनाया गया मेरे लिए तो बनाया नहीं गया. तो उस दिन मैंने तय किया कि उत्तर प्रदेश के अंदर चाहे एक्सप्रेस वे हो, चाहे नेशनल हाइवे हो या फिर स्टेट हाइवे हो, चाहे हमारे जिले के मुख्य मार्ग हो चाहे अन्य मार्ग हो 60 मीटर तक चौड़ी कोई भी सड़क हो. गांव उससे 5 किलो मीटर अंदर तक होगा तो उसको हम मुख्य मार्ग से जोड़ेंगे और हमने इसका एक बड़ा अभियान चलाया.दूसरा हमने एक और तय किया था कि 2001 में जिन गाँवो की आबादी 250 थी उसमे से भी बहुत बड़ी संख्या में गाँव छूटे हुए थे. कन्नौज ,इटावा , मैनपुरी के गांव भी छूटे थे. अमेठी और रायबरेली के भी कई गांव छूटे थे.हमने सड़क बनावकर समाज के आखिरी आदमी विकास की धारा से जोड़ा है.

प्रश्न - PWD ने नवीन तकनीकी के मदद से 942 करोड़ की बचत की , इस बारे मंओ भी बताइए.

उपमुख्यमंत्री : हमने सड़क निर्माण में नवीन तकनीक अपनाया है जिससे कम पत्थर से मार्गो का निर्माण कर खदान एवं ढुलाई से होने वाले कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है. इससे कम लागत में मजबूत सड़क बनाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को बल मिला है विभाग ने खनन की बजाय रिसाइकिल मैटेरियल का उपयोग किया और ऐसे कैमिकल मिलाये गये जिससे उसकी मजबूती भी बढ़ी है. लगभग 25 से 30 प्रतिशत कम लागत में अधिक समय तक टिकी रहने वाली सड़कों का निर्माण करके हमने उत्तर प्रदेश में पिछले वित्तीय वर्ष में नौ सौ बयालीस करोड़ रूपये की बचत की. साथ ही साढ़े तीन करोड़ वृक्ष लगाकर अगले दस साल में कार्बन उत्सर्जन में जो कमी आती है उतना हमने केवल यह नई तकनीकी का इस्तेमाल करके बचाया है.

प्रश्न - इसके साथ साथ पीडब्लूडी ने हर्बल पेड़ लगाने का भी काम किया इससे क्या फायदा है ?

उपमुख्यमंत्री : वन और जल एक दूसरे का पूरक हैं अगर पेड़ नहीं होंगे तो हमारे यंहा पानी नहीं होगा तो फिर तो सब तरफ त्राहिमाम होगा. आज स्थिति क्या है लोग पेड़ लगाने की जगह काट रहे हैं. हमने कहा कि पेड़ भी लगाइए ऐसे पेड़ लगाइए जिसमें पक्षी भी आकर अपना घोंसला बनाये अपना घर बनाये और ऐसे वृक्ष लगाइए जो औषधि का कार्य करें फलदार वृक्ष लगाइए जिसका फल चिड़िया भी खाए मनुष्य भी खाए तो इस दिशा में हमने हर्बल रोड बनाने की दिशा में कार्य किया. प्रदेश में 500 से अधिकखंडो में हमने तय किया है कि एक एक रोड़ उनमे से हर्बल होगी और अच्छे वृक्षों को लगाकर उनको सिंचित भी करेंगे.

प्रश्न - PWD विभाग किसी प्रदेश का हो आरोप हमेशा से लगते रहे है फिर इतना रचनात्मकता आईडिया और कार्यशैली कैसे ?

उपमुख्यमंत्री : देखिये, हम जिस परिवेश से आये हैं. वहां की जरूरत क्या थी वहां हमें क्या परेशानी होती थी से हम भलिभांति परिचित हैं. आज भी हमारे रिश्ते- नाते, सम्बन्ध- सम्पर्क, कार्यकर्ताओ से हैं. उनसे भी समझने की कोशिश करते है कि क्या ऐसा किया जाए. बस यही से प्रेरणा मिलती है हमें जनता की सेवा करने का मौका मिला है. हम अखिलेश यादव जी की तरह आसमान में काम नहीं करते हैं हम जमीन पर काम करते हैं जो आमलोगों के हित में होता है वही अच्छा होता है.

प्रश्न - सडकों के जरिये सामजिक संदेश देने के लिए और क्या योजनायें हैं?

उपमुख्यमंत्री : हम लोगों ने तय किया था कि हर जिले में वंहा के महत्वपूर्ण महापुरुष, चाहे वह स्वतन्त्रता सेनानी हों, चाहे खेल के क्षेत्र में मान सम्मान बढाने वाले हो ऐसे लोगों के नाम पर सड़कों का नामकरण करेंगे. वह प्रक्रिया जारी है .

प्रश्न - केंद्र सरकार ने जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटा ली है आपकी क्या प्रतिक्रिया है

उपमुख्यमंत्री : ये तो देश के लिए गौरव की बात है इससे अधिक खुशी कोई दूसरी हो ही नहीं सकती है. धारा 370, 35ए कैंसर रूपी रोग था. जिसे हटाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और अमित शाह जी ने भारत का मस्तिक गर्व से दुनिया के सामने ऊँचा कर दिया है. ये हमारी विदेश नीति की भी सफलता है और राष्ट्र की सुरक्षा की दृष्टि से जम्मू कश्मीर के विकास की दृष्टि से और जो तीन परिवार प्रदेश के लोगो को लूट रहे थे उन तीन परिवार की लूट की योजना से जम्मू कश्मीर को बाहर निकालने की दृष्टि से बहुत शानदार फैसला है.

प्रश्न - सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि पर प्रतिदिन सुनवाई हो रही है प्रदेश सरकार कितनी आशान्वित है ?

उपमुख्यमंत्री : रामलला का जन्म अयोध्या में हुआ था हमारे धर्म ग्रन्थ कहते हैं साधु संत कहते हैं राम लला वहां विराजमान हैं. 1992 से2019, 28-29 वर्ष बीत गए हैं. अब सुनवाई करके फैसला आ जाये और राम लला का भव्य मन्दिर बने इस बात की प्रतीक्षा हर राम भक्त हर साधु संत को है और मैं भी कर रहा हूँ.

काशी विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह में श्रद्धालुओं के प्रवेश पर स्थायी रोक, बाहर से जलाभिषेक

दरअसल सावन में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए अस्थाई तौर पर इस बार मंदिर के गर्भगृह के दरवाजे से ही जलाभिषेक की व्यवस्था की गई थी। इस निर्णय से पूरे सावन काफी अच्छे परिणाम मिले। सभी श्रद्धालुओं ने बिना किसी परेशानी के आसानी से जलाभिषेक किया।

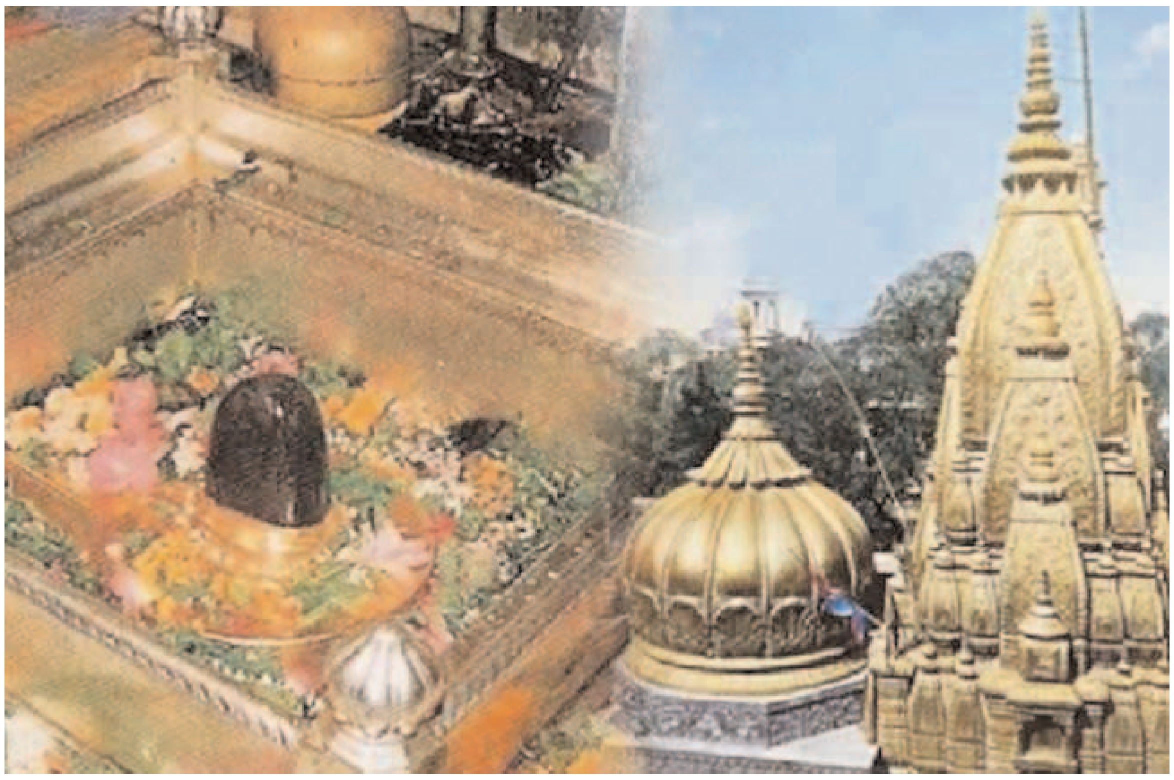

पूर्वापोस्ट संवाददाता।

वाराणसी। विश्वविख्यात वाराणसी के श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर प्रशासन ने भारी भीड़ से बचने के लिए अब व्यवस्था में परिवर्तन किया है। मंदिर प्रशासन ने मंदिर के गर्भगृह में श्रद्धालुओ के प्रवेश पर स्थायी रोक लगा दी है। यहां पर अब सभी श्रद्धालु मंदिर के गर्भगृह के दरवाजे से ही जलाभिषेक करेंगे।

वाराणसी के श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर प्रशासन ने यहां मंदिर के गर्भगृह में श्रद्धालुओ के प्रवेश पर स्थायी रोक लगा दी है। अब श्रद्धालु गर्भगृह के दरवाजे से ही जलाभिषेक करेंगे। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के कार्यपालक अधिकारी विशाल सिंह ने बताया दरअसल सावन में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए अस्थाई तौर पर इस बार मंदिर के गर्भगृह के दरवाजे से ही जलाभिषेक की व्यवस्था की गई थी। इस निर्णय से पूरे सावन काफी अच्छे परिणाम मिले। सभी श्रद्धालुओं ने बिना किसी परेशानी के आसानी से जलाभिषेक किया। वहीं प्रशासन को भी भीड़ से ज्यादा परेशानी नहीं हुई।

उन्होंने बताया कि ऐसी ही व्यवस्था झारखंड में देवघर में बैजनाथ धाम में भी की गई है। विशाल सिंह ने बताया कि अब मंदिर प्रशासन ने तय किया है कि इस अस्थायी व्यवस्था को स्थायी किया जाए। अब श्रद्धालुओं का गर्भगृह में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। यहां पर गर्भगृह के चार द्वार हैं, श्रद्धालुओं को प्रवेश और निकासी में दो द्वार का ही इस्तेमाल होता है। भीड़ बढने़ पर दबाव काफी हो जाता है। वहीं चारों द्वार पर अर्घा लगाकर सीधे जलाभिषेक की व्यवस्था होने से सभी श्रद्धालुओं को भी सुविधा मिलेगी।

पबजी फार्मूले पर दो छात्रों ने बनाई स्मॉर्ट आर्मी गन, 100 से 300 मीटर की दूरी तक भेदती है लक्ष्य

बच्चों ने ग्राफिक्स के जरिए इसका डेमो भी तैयार किया है

इसको बनाने में दो महीने लगे और 20 हजार रुपए से अधिक का खर्चा आया

पूर्वापोस्ट संवाददाता।

वाराणसी। यहां के सारनाथ इलाके में स्थित अशोक इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नालॉजी में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के दो छात्रों ने 15 अगस्त से पहले ही देश के वीर जवानों के लिए एक अनोखी स्मॉर्ट गन तैयार की है। महज 20 हजार रुपए खर्च करके बच्चों ने यह स्मॉर्ट आर्मी गन मशहूर गेम ÷ पबजी÷ से आइडिया लेकर बनाई है। इसे स्मार्ट फोन से गेम खेलते हुए आसानी से रिमोट के जरिए ऑपरेट किया जा सकेगा। 2 महीने के मेहनत के बाद छात्रों द्वारा यह तैयार किया गया है। अब इसका डिजिटल परीक्षण भी किया जा रहा है। यहां के बड़ालालपुर के रहने वाले विशाल पटेल और सतेंद्र पटेल थर्ड ईयर मैकेनिकल के स्टूडेंट है। दोनों के पिता किसान है। पूरा प्रोजेक्ट दोनों ने रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंचार्ज श्याम चौरसिया के देखरेख में बनाया है।

मेक इन इंडिया की तर्ज पर बनाया

विशाल पटेल ने बताया इस मशीन को बनाने का आइडिया हो दोनों को ÷ पबजी÷ से आया है। इस पूरे सिस्टम को हम लोगों ने स्मॉर्ट आर्मी बबजी गेम का नाम दिया है। इसमें एक वायरलेस रिमोट है जिसे किसी भी स्मॉर्ट फोन से कनेक्ट कर ऑपरेट किया जा सकता है। इस मे कइ तरह के गन लगे होंगे, जिन्हें जरूरत के मुताबिक रिमोट कंट्रोल की सहायता से चेंज कर सकते हैं। मारक छमता 100 मिटर से 300 मीटर होगी।

मशीन का वजन तकरीबन 35 से 40 किलोग्राम है। इसे 360 डिग्री में किसी भी दिशा में घुमा कर टार्गेट किया जा सकता है। सतेंद्र पटेल ने बताया कि मशीन में पार्ट्स, 2 इंच पाइप, 12 बोल्ट की बैटरी, विडियो गेम का पार्टस, 2 कैमरे, बनाने का उद्देश्य अपने देश व जवानों के जान माल की रक्षा करने का है।

श्याम चौरसिया ने बताया जवानों की रक्षा के लिए कुछ करने की जिज्ञासा बचपन से मेरे मन में था। एक ऐसा सिस्टम तैयार किया जाए जिसकी मदद से बॉर्डर पर हमारे देश के जवान बिना जान गवांए सुरक्षित रह कर दुश्मनों व आतंकियों का सामना कर सकेंगे। दोनों ने आइडिया दिया और हमने मार्ग दर्शन के जरिए डमी ÷ पबजी÷ बनवाया। इस गेम को मैंने indian bubg game का नाम दिया है।

गन को कैसे ऑपरेट किया जा सकेगा

इसमें रिमोट को मोबाइल से कनेक्ट किया गया हैं, जिससे आईपी कैमरा से हम दुश्मन पर नजर रखते हुए रिमोट से संचालित कर गोला फायर कर सकते हैं। सबसे पहले इस मशीन को हम अपने बॉर्डर एरिया में इंस्टॉल कर देंगे। उसके बाद मशीन मे लगाए गए एंड्राइड मोबाइल को हम रिसीवर से अटैच कर आईपी कैमरा की मदद से कहीं से भी मशीन के आसपास निगरानी कर सकेंगे। अपने मोबइल फोन तथा ट्रांसमीटर की मदद से इस आर्मी गेम को यूज कर बॉर्डर की रक्षा कर सकेंगे। इस मशीन मे गोलियों को लोड कर देने के बाद आप अपने मोबइल से अटैच कर ट्रांसमीटर की मदद से लाइव होकर एक रिएल गेम की तरह दुश्मन पर गोली चला सकते हैं।

अपराधी को फरमान, 50 पौधे लगाओ, वरना लगेगा गुंडा ऐक्ट

पूर्वापोस्ट संवाददाता।

वाराणसी। वाराणसी के एडीएम ने एक आरोपी को 50 पौधे लगाने की सजा सुनाई। आरोपी प्रमोद को एक पखवाड़े के अंदर 50 पेड़ लगाकर प्रमाण के रूप में उसकी फोटो और ग्रामीणों का सहमति-पत्र कोर्ट में पेश करना होगा।

वाराणसी के एडीएम ने एक आरोपी को 50 पौधे लगाने की सजा सुनाई। आरोपी प्रमोद यादव को गुंडा नियंत्रण ऐक्ट के तहत गिरफ्तार कर शुक्रवार को एडीएम (प्रशासन) राजेश कुमार श्रीवास्तव की अदालत में पेश किया गया था।

प्रमोद को एक पखवाड़े के अंदर 50 पेड़ लगाकर प्रमाण के रूप में उसकी फोटो और ग्रामीणों का सहमति-पत्र कोर्ट में पेश करना होगा। आदेश में कहा गया है कि ऐसा करने पर ही गुंडा नियंत्रण अधिनियम में जारी नोटिस वापस लिया जाएगा। मामले की अगली सुनवाई की तारीख 30 अगस्त तय की गई है।

हार्ड कौर के खिलाफ शिकायत दर्ज, खालिस्तान समर्थक नारेबाजी और पीएम पर विवादित टिप्पणी

पूर्वापोस्ट संवाददाता।

वाराणसी। पंजाबी सिंगर और रैपर हार्ड कौर के विवादित सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर यूपी के वाराणसी के कैंट थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है। आरोप है कि हार्ड कौर ने खालिस्तान के समर्थन में नारेबाजी के अलावा वाराणसी के सांसद और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और सेना के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी की है। उनका एक विडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

सभी कॉमेंट्स देखैंअपना कॉमेंट लिखेंदरअसल हार्ड कौर का एक विडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है, जिसमें वह खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हुए भारत व केंद्र सरकार को अपशब्द कहती दिख रही हैं। इसके साथ ही वह बस के सामने अभद्र हरकतें भी करती दिखाई दीं। पंजाबी सिंगर हार्ड कौर के खिलाफ शिकायत इस्लामिक सद्भावना फाउंडेशन के सचिव अधिवक्ता शशांक शेखर त्रिपाठी ने दर्ज कराई है।

शिकायत में कहा गया है कि फेसबुक चेक करने के दौरान पता चला कि हार्ड कौर अपने फेसबुक पेज पर लगातार भारत विरोधी पोस्ट डालकर कश्मीर और पंजाब में सरकार के खिलाफ जनभावनाओं को भड़काने का काम रही हैं। इसमें आगे लिखा है, गलत व फर्जी वीडियो अपलोड कर भारत सरकार के खिलाफ युद्ध भड़काने का प्रयास भी हार्ड कौर द्वारा किया जा रहा है। धार्मिक प्रतीक का भी अत्यंत भड़काऊ तरीके से चित्रण किया जा रहा है।

शिकायती पत्र में कहा गया है कि हार्ड कौर द्वारा लगातार इस तरह के पोस्ट से भारत की गरिम व प्रतिष्ठा को ठेस पहुंच रही है। उनका यह कृत्य राष्ट्रद्रोह प्रकृति का और धार्मिक सद्भावना बिगाड़ कर दंगा करवाने की साजिश है। कैंट थाने के कार्यकारी प्रभारी काशीनाथ उपाध्याय ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। इसके बाद मुकदमा दर्ज करने की कार्रवाई होगी।

हार्ड कौर का एक विडियो सोशल मीडिया पर सामने आया था, जिसमें वह खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हुए भारत व केंद्र सरकार को अपशब्द कहती दिख रही हैं। इसके साथ ही वह बस के सामने अभद्र हरकतें करती भी दिखाई दीं।

फिल्म मिशन मंगल से जौनपुर के गांव का छोरा अमित सिंह की बॉलीवुड में दस्तक

पूर्वांपोस्ट संवाददाता

जौनपुर। गांव की मिट्टी में पलकर बड़ा हुआ ये छोरा अब बॉलीवुड में धमाल मचाने के साथ देश का फेम बन चुका है। मेहनत व काबिलियत के बल पर गांव के मिट्टी के चबूतरे से बने रंगमंच से जनपद जौनपुर के जगदीशपुर गांव निवासी अमित सिंह आज वालीवुड के जानी मानी हस्ती अक्षय कुमार, सोनाक्षी सिन्हा, विद्या बालन, तापसी पन्नू, शरमन जोशी, कृति कुलहरी जैसे कलाकारों के साथ फिल्मों में प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है।

गांव की मिट्टी में पलकर बड़ा हुआ ये छोरा अब बॉलीवुड में धमाल मचाने के साथ देश का फेम बन चुका है।

अमित सिंह ने फिल्म जगत में अपनी मेहनत का ऐसा लोहा मनवाया कि जगन शक्ति के निर्देशन में आगामी 15 अगस्त को रिलीज हो रही मल्टीस्टार वालीवुड फिल्म मिशन मंगल में अहम रोल मिला। इस फिल्म में उरी की फिल्म फल्म की मुख्य अभिनेत्री कृति कुलहरी के पति के रोल में नजर आएंगे।

यह फिल्म इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा मंगल ग्रह पर भेजे गये मंगलयान पर आधारित है। इसके निर्माता आर बल्कि व अभिनेता अक्षय कुमार है। अमित सिंह की इस उपलब्धि पर परिवार और सभी लोगों में हर्ष का माहौल है। अमित के पिता बिरजू सिंह सेवानिवृत पुलिस अधिकारी है। चार भाइयों मे सबसे छोटे अमित बचपन से ही फिल्मी दुनिया से आर्किषत थे और सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। टीवी सीरियल की अपार सफलता के बाद अमित ने अब बालीवुड में जोरदार दस्तक दी है। साथ ही इसी महीने मे हरमन बवेजा प्रोडक्शन की एक सत्य घटना पर आधारित वेब सीरीज मे भी अमित मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। अमित ने अपने कैरियर की शुरुआत फैशन डिजाइनर और माडल के रूप में की तो अपने मेहनत के बल पर वो मुकाम हासिल कर लिया जो एक कलाकार का सपना होता है। स्टार प्लस पर तमाम धारावाहिकों मे अपने अभिनय का लोहा मनवा चुके अमित का सपना है एक दिन अपने माडल महानायक अमिताभ बच्चन की पा जैसा किरदार निभाना जाते है। 2016 में मिस्टर दिल्ली भी रह चुके अमित मिस्टर इंडिया मे भी प्रतिभाग कर चुके हैं। अमित के पिता बिरजू सिंह एक सेवानिवृत पुलिस अधिकारी है।

अमित की इन्टर तक की शिक्षा टी.डी. कालेज से हुई। फिर इन्होंने देश के प्रतिष्ठित संस्थान नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ़ फैशन टेक्नोलॉजी से टेक्स टाईल डिजाइन मे बैचलर की डिग्री ली और यही से इनका रुझान फिल्मी दुनिया की तरफ हुआ। हालीवुड अभिनेता अल-पचिनो और महानायक अमिताभ बच्चन को अपना आदर्श मानने वाले अमित की यही ख्वाहिश है कि वे सार्थक और मनोरंजक फिल्मों द्वारा सबका मनोरंजन करते रहें। वे

अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, बड़े भाईयों और अपने गुरुजनों को देते हैं।

बचपन से ही अभिनय का था शौक...

अमित ने बताया कि बचपन से ही अभिनय का शौक था। गॉडफादर फिल्म देखने के बाद फिल्मों में जाने का मन बना लिया। स्कूलों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़- चढ़कर भाग लेना और उसने भी हमेशा प्रथम पुरस्कार पाना मेरी हमेशा चाहत रहती थी। पढाई में भी हमेशा अव्वल छात्रों में गिनती होती थी। पढ़ाई के दौरान जनक कुमारी में आयोजित जनपद स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम में विजेता होने पर प्रधानाचार्य ने मंच से कहा था कि एक दिन अपने कला से जौनपुर का नाम देश-विदेश मे रोशन करेगा।

परिजन चाहते थे सिविल सेवा में जाएं अमित...

बचपन से ही पढने मे मेधावी अमित के घर वाले उन्हे सिविल सिंवसेज की तैयारी के लिए हमेशा कहते थे लेकिन इनका रुझान बचपन से ही कला और अभिनय की तरफ था ये विद्यालय और जनपदीय सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्यक्रमों मे बढ़ चढ़ के प्रतिभाग करते थे।

बीच बचाव करने में गई जान, नशे में चूर युवकों ने जूता व्यापारी की चाकू से गोदकर हत्या की

पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है

वाराणसी।

जिले के नई बस्ती में शुक्रवार देर रात ठेला दुकानदार की पिटाई करने से मना करने से नाराज नशे में धुत युवकों ने जूता व्यवसायी की

चाकू मारकर हत्या कर दी। वारदात के बाद स्थानीय लोगों ने एक आरोपी को पकड़कर जमकर पीटा। बाद में लोगों ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। कैंट थाना क्षेत्र के हुकुलगंज नई बस्ती निवासी अरविंद की उनके घर के नीचे जूते की दुकान है। इसके अलावा वह ऑनलाइन जूते मंगवा कर भी सप्लाई करते थे। स्थानीय लोगों के अनुसार अरविंद की दुकान के सामने सड़क उस पार नशे में धुत दो युवक एक ठेला दुकानदार के साथ मारपीट कर रहे थे। अरविंद दुकान से उठ कर गए और समझा बुझाकर शांत करा दिए।

इसके लगभग 10 मिनट बाद एक युवक अरविंद की दुकान पर आया और उन्हें बुला कर सड़क की तरफ ले गया।

इसके बाद अरविंद की गर्दन और पेट पर चाकू से वार कर भाग निकला। आनन-फानन में अरविंद को बीएचयू ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। एसपी सिटी दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि घटनास्थल से पकड़ा गया युवक नशे में धुत है और आधी-अधूरी जानकारी दे रहा है। अन्य आरोपियों को भी चिह्नित कर लिया गया है और उनकी तलाश में पुलिस की तीन टीमें लगाई गई हैं।

जमीन विवाद से जुड़ीं महत्वपूर्ण फाइलें गायब, शासन ने मांगी रिपोर्ट

सोनभद्र हत्याकांड; अधिकारियों व कर्मचारियों ने दो दिन का मांगा है समय

पूर्वांपोस्ट संवाददाता

लखनऊ/सोनभद्र। सोनभद्र में हुए सामूहिक हत्याकंड से जुड़ीं कई महत्वपूर्ण फाइलें वन विभाग से गायब हो गई हैं। कई बार फाइलें मांगे जाने पर भी नहीं मिलीं तो संबंधित

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से सोनभद्र में राजनेताओं, अधिकारियों और दबंगों की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर वन विभाग की भूमि कब्जाने की शिकायत की गई थी। शासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि छुट्टी के दिन भी शनिवार को फाइलें ढूंढने के लिए लगाया गया।

अधिकारियों व कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की चेतावनी दी गई है। सूत्रों के अनुसार संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों ने स्थिति स्पष्ट करने के लिए दो-तीन दिन का समय और मांगा है। इसके बाद फाइलें न मिलने पर उच्च स्तर से आगे की कार्यवाही का निर्णय ले लिया जाएगा।

इस पर सीएम कार्यालय ने शासन के वन विभाग से पूरे मामले पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी। सूत्रों के मुताबिक, जवाब तैयार करने के लिए फाइलें खंगाली गई तो जो स्थिति सामने आई, उससे अधिकारी भी हैरान रह गए। संबंधित कई महत्वपूर्ण फाइलें शासन में है ही नहीं, जबकि इन्हें वन मुख्यालय से शासन को भेजा गया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से सोनभद्र में राजनेताओं, अधिकारियों और दबंगों की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर वन विभाग की भूमि कब्जाने की शिकायत की गई थी। शासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि छुट्टी के दिन भी शनिवार को फाइलें ढूंढने के लिए लगाया गया। संबंधित कार्मिकों को दो-तीन का और समय दिया गया है, इसके बाद भी अगर फाइलें नहीं मिलती हैं, तो नियमानुसार एफआईआर करा दी जाएगी।

रेणुका कुमार की अध्यक्षता में गठित की गई कमेटी

जमीन विवाद में सोनभद्र नरसंहार के बाद सोनभद्र व मिर्जापुर में कृषि सहकारी समितियों के नाम दर्ज जमीन और एक लाख हेक्टेयर से ज्यादा वन भूमि पर अवैध कब्जों की जांच के लिए अपर मुख्य सचिव रेणुका कुमार की अध्यक्षता में कमेटी गठित की गई है।

जमीन विवाद में हुई थी 10 लोगों की हत्या

गौरतलब है कि सोनभद्र के घोरावल थानाक्षेत्र के उम्भा में 17 जुलाई को नरसंहार हुआ था। सौ बीघा विवादित जमीन को लेकर गुर्जर और गोड़ बिरादरी में खूनी संघर्ष हो गया था। इस दौरान फायरिंग के साथ जमकर लाठी-डंडे और फावड़े भी चले। इसमें 10 लोगों की मौत हो गई, जबकि 28 लोग घायल हो गए थे। इसके बाद जिले में धारा 144 लागू कर दी गई थी।

काशी में गंगा आरती का प्रसारण होगा एलईडी स्क्रीन पर, पर्यटक उठा सकेंगे लुत्फ

● काशी विश्वनाथ धाम में भी कई जगहों पर एलईडी स्क्रीन लगाई जाएंगी।

देवी सुरेश्वरी भगवती गंगे...गंगा के तट पर होने वाली विश्वप्रसिद्ध गंगा आरती का नजारा काशी विश्वनाथ मंदिर और गंगा घाटों पर एलईडी स्क्रीन पर नजर आएगा।

योजना के अनुसार विश्वनाथ मंदिर में होने वाली आरती का भी इन एलईडी स्क्रीन पर सीधा प्रसारण करने की तैयारी की जा रही है। परियोजना पर 11.5 करोड़ रुपये खर्च होंगे। केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की ओर से गंगा आरती और बाबा विश्वनाथ की आरती के प्रसारण के लिए शहर के प्रमुख स्थानों सहित घाटों पर एलईडी स्क्रीन लगाई जाएगी। अधिकारियों का कहना है कि जो लोग घाट से दूर हैं और गंगा आरती में शामिल नहीं हो सकते हैं उनके लिए सीपीडब्ल्यूडी अन्य घाटों, काशी विश्वनाथ मंदिर और प्रस्तावित धाम में बहुत सारी बड़ी एलईडी स्क्रीन लगाएगा।

अधिकारियों ने बताया कि सभी आवश्यक उपकरण गंगा आरती के लाइव टेलीकास्ट के लिए खरीदे जाएंगे। जैसे ही अनुमानित लागत स्वीकृत हो जाएगी, परियोजना पर काम शुरू हो जाएगा। बहुत से विदेशी सैलानी काशी आते हैं। वह गंगा आरती में शामिल होते हैं और एलईडी स्क्रीन लगने से घाट की खूबसूरती बढ़ जाएगी।

सोनभद्र नरसंहार- सपा ने की पीड़ितों को एक-एक करोड़ मुआवजा की मांग

26 अगस्त को विधानसभा का घेराव

पूर्व की सपा सरकार में राज्यमंत्री रहे व्यास जी गौड़ ने घोरावल के उम्भा कांड में मृतकों के आश्रितों को एक- एक करोड़ रुपये व एक सदस्य को नौकरी तथा घायलों को 50-50 लाख रुपये मुआवजा देने की मांग यूपी सरकार से की है। साथ ही आदिवासियों के अधिकार की मांग को लेकर 25 अगस्त को विधानसभा के समक्ष कैंडिल मार्च और 26 अगस्त को विधानसभा का घेराव करने का एलान किया है।

रविवार को सपा के जिला कार्यालय पर पत्रकार वार्ता में पूर्व राज्यमंत्री व्यास जी गौड़ ने कहा कि उम्भा के विवादित जमीन को लेकर भाजपा सरकार में दाखिल खारिज हुआ।

भाजपा सरकार में ही वहां के आदिवासियों के खिलाफ गुंडा एक्ट तक के मुकदमे दर्ज किए गए। यह आदिवासियों का खुला उत्पीड़न है। जिस जमीन को लेकर वहां के दस गोड़ आदिवासियों की हत्या हुई, उसे लेकर वर्तमान की भाजपा सरकार में ही तमाम समस्याएं पैदा की गईं।

आदिवासी अपनी मांगों को लेकर 25 अगस्त की शाम को लखनऊ में विधानसभा के समक्ष कैंडिल मार्च निकालेंगे, फिर 26 मार्च को विधानसभा का घेराव करेंगे। गौड़ ने कहा कि प्रदेश के किसानों, नौजवानों, अल्पसंख्यकों, गरीबों, बेरोजगारों की अनदेखी करते हुए भाजपा अपने राजनीतिक एजेंडे पर काम करने लग गई है।

इन हालात में सपा के कार्यकर्ता चुप रहकर प्रदेश की जनता को प्रताड़ित होते नहीं देखना चाहते। भाजपा के इशारे पर जनपद के अधिकारी काम कर रहे हैं। जनता की आवाज को भी उठाने नहीं दे रहे हैं। इस तानाशाही को सपा के कार्यकर्ता कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। पत्रकार वार्ता में सपा जिलाध्यक्ष विजय यादव, पूर्व विधायक अविनाश कुशवाहा, रमेश चंद्र दूबे, सईद कुरैशी, डॉ. गोपाल सिंह, हृदयनारायण गोड़, हिदायत उल्ला खां, रमेश सिंह यादव मौजूद रहे।

यूपी- सहारनपुर से आगे रेलवे ट्रैक पर भरा पानी, चार ट्रेनें प्रभावित

सहारनपुर और अंबाला के बीच दुखेड़ी स्टेशन पर रेलवे ट्रैक पर पानी भर जाने से रेल यातायात बाधित हो गया।

इसके चलते पांच ट्रेनों को लौटना पड़ा। हालांकि, रविवार शाम से ही दिल्ली की तरफ से आने वाली वाया मेरठ, सहारनपुर की ओर जाने वाली ट्रेनों को देरी से चलाया जा रहा था। लेकिन अधिक बारिश होने से ट्रैक पानी में डूब गया।

नई दिल्ली से चलकर वाया मेरठ, जालंधर को जाने वाली सुपर एक्सप्रेस को कैंट स्टेशन से वापस नई दिल्ली भेजा गया। यह ट्रेन 5 घंटे 56 मिनट की देरी से रात 10:15 बजे कैंट स्टेशन पहुंची थी। आगे सिग्नल न मिलने के कारण इसे लौटाना पड़ा।

वहीं दिल्ली से वाया मेरठ, जम्मू को जाने वाली शालीमार एक्सप्रेस भी 2 घंटे 35 मिनट की देरी से रात 8:30 बजे मेरठ पहुंची। इस ट्रेन को दो घंटे तक दौराला स्टेशन पर रोका गया। इसके बाद दिल्ली की तरफ भेज दिया गया। वहीं, मुंबई से चलकर वाया मेरठ, अमृतसर को जाने वाली गोल्डन टेम्पल का भी हाल यही रहा। ट्रेन को सिटी स्टेशन से दिल्ली की तरफ रवाना किया गया।

पूर्वांपोस्ट

सर्वोच्च आदर्श शिक्षक से सम्मानित डॉ दयानन्द तिवारी पूर्वांचल की शान हैं

आठ पुस्तक लिख चुके तिवारी को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा 2017 में नन्द दुलारे समीक्षा सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। सिर्फ इतना ही नहीं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में शोध वाचन हेतु आमंत्रित किया जा चुका है।

सुनील तिवारी। मुंबई

मुंबई के एसआईडब्लूएस महाविद्यालय में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दयानन्द तिवारी हिंदी की सेवा कर विभिन्न कीर्तिमानों को स्थापित कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। मूल रूप से पूर्वांचल के अंबेडकर नगर जिले के रहने वाले डॉ तिवारी महाराष्ट्र के सर्वोच्च शिक्षक सम्मान राज्य आदर्श शिक्षक पुरुस्कार 2017-18 से भी नवाजे जा चुके है। डॉ तिवारी 1979 में बारहवीं की शिक्षा प्राप्त कर मुंबई गए थे. कम उम्र में पिता का साया सिर से उठ जाने के बाद भी दयानंद जी का हौसला नहीं टूटा, उनके हौसले को बडे भाई का साथ मिला और दयानंद जी ने आगे की पढाई मुंबई विश्वविद्यालय में की. यहीं से एमए हिंदी, एमए शिक्षा शाष्त्र, मानव संसधान में एमबीए की डिग्री भी अपने श्रम से प्राप्त करने वाले डॉ तिवारी को प्रदेश सरकार ने

महाराष्ट्र राज्य पुस्तक समिति एवं अभ्यासक्रम संशोधन मण्डल और बालभारती समिति सदस्य नामित किया. डॉ तिवारी के शोध निर्देशन में अब तक लगभग एक दर्जन विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधि दी जा चुकी है। यही नहीं

आठ पुस्तक लिख चुके तिवारी को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा 2017 में नन्द दुलारे समीक्षा सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। सिर्फ इतना ही नहीं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में शोध वाचन हेतु आमंत्रित किया जा चुका है। 2019 में तिवारी को मानद डी लिट् की उपाधि से भी नवाजा जा चुका है। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ दयानन्द तिवारी राज्य के प्रगत शैक्षिणिक कार्यक्रम शिक्षणाची वारी के प्रमुख रह चुके है।

शिक्षा के साथ समाज सेवा भी यह कर्म और धर्म के रूप में निभाते हैं गरीब निस्सहाय लोगों के लिए हमेशा तत्पर रहने वाले डॉक्टर तिवारी को पूर्वांचल के लोग अपने दिल में बिठा कर रखते हैं डॉक्टर तिवारी महाराष्ट्र में रहते हुए यूपी के साथ हीं मराठी समाज के गरीब निस्सहाय लोगों को मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं तथा अब तक 50 से भी ज्यादा गरीब कन्या के विवाह के लिए भी विवाह कार्यक्रम आयोजन कर चुके हैं.शिक्षक सेल के चेयकमैन रहते हुए इन्होंने शिक्षक हितों के लिए खूब संघर्ष किया तो बतौर अध्यक्ष रिक्शा और टैक्सी युनियन ये गरीबों की आवाज रहे हैं. डॉ तिवारी अपने इन्ही गुणों की वजह से महाराष्ट्र के सर्वाधिक योग्यता वाले शिक्षकों में भी गिने जाते हैं.

डॉ तिवारी की प्रकाशित आठ पुस्तकें क्रमशः साहित्य का समाजशास्त्र , हिंदी कहानी विविध विमर्श, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का समाजशास्त्र, हिंदी कहानी विविध आयाम आदि है।

हिंदू है तो गाय बचाने का मिलेगा पुण्य, मुस्लिमों को हज का सबाब- 120 साल पहले ऐसे निकलता था इश्तेहार

गाजीपुर के कुंवर नसीम रजा खां ने बना रखी है दुर्लभ पांडुलिपियों की लाइब्रेरी

गाजीपुर।

देश 15 अगस्त को आजादी की 72वीं वर्षगांठ मनाएगा। ब्रिटिश हुकूमत के समय में आज से 120 साल पहले अखबारों में इश्तेहार किस तरह ओर कितने रूपए में निकलते थे? यह सबकुछ उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के दिलदारनगर गांव के रहने वाले कुंवर मोहम्मद नसीम रजा खां ने अपनी अल दीनदार शम्सी म्यूजियम एंड लाइब्रेरी में सहेजकर रखा है। उन्हें ऐतिहासिक चीजों व दस्तावेजों को संग्रहीत व संरक्षित करने का जुनून है। तब भी गाय चर्चा में थी। गुमशुदगी के एक इश्तेहार में जानकारी देने पर हिंदूओं को गाय को बचाने जैसे पुण्य कार्य और मुस्लिमों को हज करने का सबाब मिलने की बात कही गई थी।

इस लाइब्रेरी में मुगलिया दस्तावेज, फारसी फरमान, पाण्डुलिपियों के साथ ही नायाब इश्तेहारों का दुर्लभ संग्रह है। नसीम कहते हैं कि, उन्होंने लाइब्रेरी की स्थापना इसलिए की है कि इतिहासकारों व शोधकर्ताओं को शोध व अध्यन में आसानी हो। नसीम के पूर्वज कुंवर नवल सिंह उर्फ मुहम्मद दीनदार खां ने 300 साल पहले दिलदार नगर की नींव रखी थी, जो बिहार से आकर यहां बसे थे। उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था। नसीम इस पीढ़ी के दसवें कुंवर हैं। उन्होंने बताया कि, उनके पास आजादी के पहले

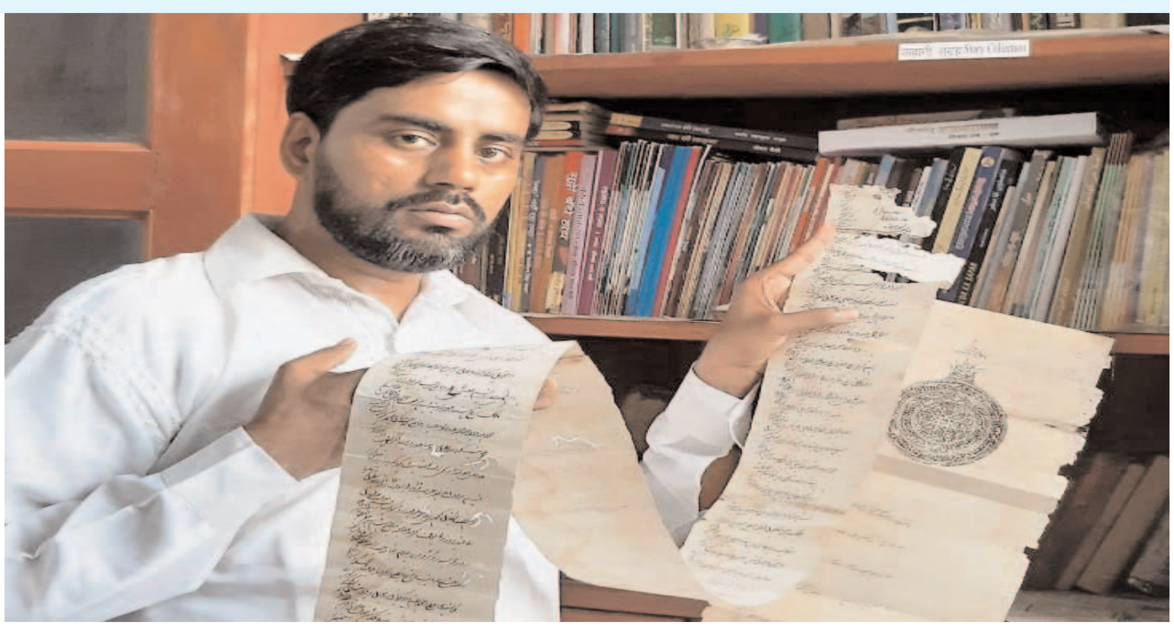

सन 1900 के बाद के कई दिलचस्प इश्तेहार दस्तावेज हैं। गुमशुदगी, चुनावी इश्तेहार, शिवरात्रि मेला, चेचक प्रकोप जैसे 100 से ज्यादा पुराने इश्तिहारों का कलेक्शन है।

कितने ग्रामीणों को लगा चेचक का टीका, 19वीं सदी का इश्तेहार

सन 19वीं सदी में चेचक के प्रकोप पर क्षेत्रीय गांव तथा मुहल्ले में कितना टीका लगाया गया। यह दस्तावेज़ 10 दिसंबर सन 1900 ई. को हस्ताक्षरित भरा हुआ फार्म है। तहसील जमानियां में चेचक के प्रकोप पर क्षेत्रीय गांव तथा मुहल्ले में कितना टीका लगाया गया है, उसकी फेरहिस्त है। जिसे आठ दिन बाद कलक्टर साहब बहादुर के समक्ष जमा कर दी गयी थी।

शिवरात्रि के मेले में मिलते थे दैनिक जीवन के सामान

यह दस्तावेज़ इश्तेहार बिहार स्थित बिहटा एग्रीकल्चरल वो इनडस्ट्रीएल शो 1909 ईस्वी का है, जिसमें 18 फरवरी सन 1909 का है, लगातार तीन दिनों तक शिवरात्रि मेले का आयोजन किया गया था। खास बात यह है कि इम मेले में दैनिक जीवन से संबंधित सभी सामग्री मिलती थी। जानवरों, भोजन सामग्रियां, कपड़े आदि सब कुछ।

गुमशुदा की तलाश के लिए 25 रूपए इनाम का इश्तेहार

यह दस्तावेज़ इश्तेहार आम 24 अगस्त सन् 1920 का है। इलाहाबाद के मुहल्ला कटरा में बेनी राम व अलोपी राम भगत जात कहार के नाम से जारी है। खास बात यह है कि गुमशुदा की तलाश पुरानी हुलिया समेत उस समय पच्चीस रूपये इनाम की घोषणाकर दी गई है। पता बताने वाले को अगर हिन्दू है तो गाय बचाने का पुण्य होगा तथा मुस्लिम भाई को हज करने का फल मिलेगा।

कुआं बनवाने के लिए 12 मजदूर और लागत तीन पैसा निर्धारित

इत्तिलानामा बनाम नसीर खां नम्बरदार मौजा दिलदारनगर परगना जमानियां के नाम यह दस्तावेज लगभग 1906 ई. का है, इसमें तहसीलदार के द्वारा गांव में कुआं बनवाने की रकम 12 मजदूरों के साथ ही तीन पैसा (पौन आना) नकद निर्धारित किया गया है। लोहे का नल लगवाई अलग से जमा करवाई गई है। इच्छुक लोगों द्वारा यह रकम इस फार्म के साथ ही तहसीलदार के समक्ष जमा कर दी जाती थी।

खुली चिट्ठी जो महात्मा गांधी के नाम

यह दस्तावेज असहयोग आन्दोलन के दौरान लिखी गई खुली चिट्ठी जो महात्मा गांधी के नाम है, इसके लेखक (मिस्टर डी जगन्नाथ राव एमए) हैं। मद्रास के न्यू इंडिया नामी अखबार से उद्धृत 28 अप्रैल सन 1921 ईस्वी दर्ज है।

सड़क निर्माण के रास्ते समाज निर्माण के संकल्प पथ पर भाजपा सरकार

स्पेशल रिपोर्ट

लोक निर्माण विभाग, किसी भी राज्य में इस विभाग का नाम आते ही मन में कई तरह की शंकाए जन्म लेने लगती हैं. और यूपी में तो इस विभाग के नाम पर ठेके और भ्रष्टाचार के आरोपों की फेहरिश्त ही है. लेकिन पिछले दो सालों में उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग ने सड़कों को मायाजाल से निकालकर एक बेहतर कल की तरफ जाने वाला रास्ता बना दिया है. कैसे ये हम आपको सिलसिलेवार बताएंगे लेकिन पहले आप इस सवाल का जवाब दीजिए कि जब आपको पता चले कि जिस सड़क से आप जा रहे हैं वह उस सड़क का नामकरण उस छात्र या छात्रा के नाम पर है जिसने विषम परिस्थितियों में पढ़कर यूपी बोर्ड की परीक्षा टॉप की है, तब आपको कैसा अनुभव होगा? जब आपको पता चलें की नई तकनीक के प्रयोग से उस सड़क के निर्माण से होने वाले प्रदूषण को बहुत कम किया गया है और साथ ही दस फीसदी की कमी भी की गई है तो आप क्या कहेंगे? जब आपको पता चलेगा कि सड़क के किनारे हर्बल पेड़ लगे हैं जिनसे पर्यावरण शुद्ध और स्वस्थ्य होता है तो आप दूसरे लोगोंको क्या बताएंगे?

जी हां ये सब उत्तर प्रदेश में ही हो रहा है और लोक निर्माण विभाग सिर्फ सड़कों को निर्माण ही नहीं कर रहा है बल्कि अपने सृजनात्मक कार्य शैली से एक बेहतर भारत की तस्वीर बना रहा है.

सड़कों का रिश्ता मंजिल के साथ वैसे ही है जैसे शिक्षा का ज्ञान से है.सड़क यानी रास्ता न हो तो मंजिल नहीं मिलती. सड़क खराब हो तो मंजिल दूर हो जाती है. ज़रूरी नहीं कि मंजिल का पता हो, लेकिन रास्तां सही होना चाहिए वरना मंजिल पता होते हुए भी खराब रास्ते से उसे हासिल नहीं किया जा सकता. शिक्षार्थियों के लिए यह बात सबसे ज़रूरी मालूम देती है क्योंकि उनका मंजिल तक पहुंचना देश के भविष्यल से जुड़ा है. विरले ही होते हैं लाल बहादुर शास्त्रीउ जैसे, जो रामनगर से गंगा पार कर के बनारस पढ़ने आते थे और कालांतर में देश के यशस्वील प्रधानमंत्री बने.

> **सड़कों का रिश्ता मंजिल के साथ वैसे ही है जैसे शिक्षा का ज्ञान से है. सड़क यानी रास्ता न हो तो मंजिल नहीं मिलती. सड़क खराब हो तो मंजिल दूर हो जाती है. ज़रूरी नहीं कि मंजिल का पता हो, लेकिन रास्ता सही होना चाहिए वरना मंजिल पता होते हुए भी खराब रास्ते से उसे हासिल नहीं किया जा सकता.**

सोचिए, उनके साथ और भी तो छात्र रहे होंगे जो तैर कर पढ़ने आते होंगे. क्या हम-आप उनके बारे में जानते हैं?

नहीं जानते. इसकी वजह यह है कि अधिकतर प्रतिभाएं रास्तोंर के अभाव में दम तोड़ देती हैं. अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाती हैं. देश उनके लाभ से वंचित रह जाता एक कल्यावणकारी राज्यम की जिम्मेचदारी है कि वह प्रतिभाओं को मरने न दे. उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार इस बात को अच्छेय से समझती है.

इसीलिए शासन में आने के बाद से उसने प्रतिभाओं को रास्ताा मुहैया कराने का एक यज्ञ शुरू किया है. इसका नाम है डॉ. एपीजे अब्दुपल कलाम गौरव पथ योजना.

दो साल पहले यूपी बोर्ड के 24 टॉपर प्रतिभाशाली छात्रों के घर तक सड़क बनाने और उसका नाममकरण उनके नाम पर करने के साथ शुरू हुई इस योजना से मिल रहे सकारात्मक परिणामों देखते हुए उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने 2019-20 के लिए 174 और सड़कों को जोडने का निर्देश दिया. लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रतिभाशाली छात्रों के गांवों को जोड़ने हेतु संचालित की जा रही डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम गौरव पथयोजना प्रतिभा, शिक्षा एवं विकास का समावेश करते हुए प्रदेश में पहली बार छात्रों को सम्मानित एवं प्रोत्साहित करने हेतु हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट के मेधावी छात्रों के निवास स्थल तक पक्कीत सड़कें बनवा रही है. जहां सड़कें टूटी हुई हैं, उनकी मरम्म्त का कार्य किया जा रहा है.

इस योजना की सफलता के बारे में केशव प्रसाद मौर्य बताते हैं कि एक बार वो बांदा के एक मेधावी छात्र से बात कर रहे थे तो छात्र ने उनसे निवेदन किया कि उसके स्कूल की सड़क खराब है यदि उसकी मरम्मत हो जाती है तो और अच्छा होता. उन्होंने तत्काल स्कूल की सड़क ठीक कराने के निर्देश दिए. उपमुख्यमंत्री बताते हैं कि प्रदेश सरकार ने इस वर्ष उन सड़कों को इस योजना में सम्मिलित कर लिया है जो विद्यालय को जाती है.

जाहिर तौर पर ये केशव प्रसाद मौर्य जैसा सहज और सरल राजनेता ही समझ सकता है कि एक्सप्रेस वे से बच्चे स्कूल पढने नहीं जाते हैं. उपमुख्यमंत्री कहते हैं कि भाजपा सरकार शिक्षा और छात्रों को हमेशा से प्राथमिकता देती है राजनाथ सिंह की सरकार के दौरान हमने नकलविहिन व्यवस्था को स्थापित कर प्रदेश में शिक्षा के अनुकुल वातारण बनाया था योगी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने मेधावी छात्रों को समर्पित गौरव पथ योजना के साथ प्रदेश सकारात्मक उर्जा के साथ शिक्षा का उत्थान करने का संकल्प लिया है. सोचिए, केवल एक छात्र की प्रतिभा का लाभ कैसे पूरे के पूरे गांव और क्षेत्र को मिलेगा और बाकी छात्रों को भी उच्चव शिक्षा के लिए अब दुर्गम रास्तोंू पर नहीं चलना होगा.बच्चोंत में प्रतिभाओं की पहचान के रास्तेए अधिरचना विकास का यह फॉर्मूला केशवप्रसाद मौर्य की मौलिक उपलब्धि है.

स्वाहभाविक है कि जिस छात्र के कारण गांव में सड़क बन रही है, उसका नाम भी सड़क के शिलापट्ट पर होना ही चाहिए. योगी सरकार ने इसका पूरा खयाल रखा है. मार्ग का नाम दर्शाने वाले पट्ट पर न केवल उत्की छात्र/छात्रा का नाम लिखा होगा बल्कि उसकी फोटो भी लगी होगी. शिक्षा में प्रोत्साहन का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता.

अमीषा शर्मा, नलिन सिंह, आरती मल्लब जैसे सैकड़ों छात्र हैं जो डॉ. कलाम पथ की दिशा दर्शाते साइनबोर्ड पर अपना चेहरा और नाम आज देख पा रहे हैं. विकास का ऐसा समावेशी मॉडल देखना दुर्लभ है जहां एक तीर से कई निशाने साधे गए हैं- एक ओर तो शिक्षा को प्रतिभा सृजन से जोड़ा गया है, दूसरे प्रतिभाओं को प्रोत्सातहित किया गया है, तीसरे प्रतिभाओं की अहमियत पक्कीा सड़क के बहाने दर्शायी गई है और चौथा, इन सब के बहाने जनता के लिए विकास के रास्तेय खोले गए हैं.

वर्ष 2018-19 में इस योजना में 89 मेधावी छात्रों के निवास स्थल के मार्ग निर्माण/मरम्मत कार्य हेतु 23.17 करोड़ की धनराशि निर्गत की गई थी, जिसमें 87 कार्य अब तक पूर्ण कराए जा चुके हैं. बचे हुए दो कार्यों को जल्दग ही पूरा किया जाना लक्षित है. वर्ष 2017-18 में 24 मेघावी छात्रों के निवास स्थल तक मार्ग निर्माण/मरम्मत का कार्य सात करोड़ 46 लाख रुपये की धनराशि से पूर्ण किया जा चुका है.

डॉ. कलाम गौरव पथ योजना प्रतिभाशाली छात्रों को न सिर्फ मंजिल तक पहुंचने के रास्ते4 मुहैया करा रही है, बल्कि डॉ. कलाम के रूप में एक नज़ीर भी पेश कर रही है कि आदर्श जीवन दरअसल कैसा होना चाहिए. डॉ. कलाम ने 2021 तक देश को विकसित करने का सपना देखा था. विकास की उनकी इस अवधारणा में बच्चे केंद्र में थे. यूपी सरकार ने इस योजना की अवधारणा में दोनों तत्वों का बराबर खयाल रखा है.

इसके अलावा लोक निर्माण विभाग एक और उल्लेखनीय कार्य कर रहा है उप्र सरकार ने नवीन तकनीक से सड़क निर्माण में की 942 करोड़ रूपये की बचत की है. पीडब्लूडी ने सड़क निर्माण में नवीनतम तकनीक का प्रयोग कर कम पत्थर से मार्गों का निर्माण कर खदान एवं ढुलाई से होने वाले कार्बन उत्सर्जन में कमी लाया है. इससे कम लागत में मजबूत सड़क बनाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को बल मिला है. चीफ इंजीनियर पीके कटियार ने बताया कि वर्ष 2018-19 में नवीन तकनीक के प्रयोग से 30.42 लाख घनमीटर पत्थर की बचत हुई, बचत से होने वाले पत्थर से गाजियाबाद से प्रयागराज तक लगभग 680 किलोमीटर लम्बे दो लेन राज्यमार्ग का निर्माण किया जा सकता है. अब तक नवीन तकनीक प्रयोग से 942 करोड़ रूपये की बचत की गयी है.उपमुख्यमंत्री बताते हैं कि इससे सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिये पर्यावरण अनुकूल सड़कें बनाने के साथ-साथ रोड साइनेज एवं रोड मार्किंग, रोड सेफ्टी आडिट भी कराया जा रहा है. प्रदेश के प्रमुख तथा अन्य जिला मार्गों के लगभग 2000 किलोमीटर एवं 417 ब्लैक स्पाट का रोड सेफ्टी सी0आर0आर0आई0 से कराया जा रहा है तथा 144 अभियन्ताओं को विभिन्न संस्थानों से रोड सेफ्टी का प्रशिक्षण दिलाया गया है.

इसके साथ ही अपने सृजनात्मक पहल में लोक निर्माण विभाग ने प्रदेश को हरा भरा बनाने और हवा को शुद्ध बनाने के लिये राजकीय व राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे हर्बल पौधे लगाना शुरू कर दिया है.

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के अनुसार, उत्तर प्रदेश यह योजना लागू करने वाला पहला प्रदेश है जो आयुष्मान भारत योजना का विस्तारित रूप है जो 18 जिलों में लांच की गई है. परियोजना को शुरुआती तौर पर सहारनपुर में दिल्ली-यमुनोत्री राजमार्ग संख्या 57 पर, वाराणसी में आशापुर-सारनाथ मार्ग पर, अयोध्या में पंचकोसी परिक्रमा मार्ग पर, गोरखपुर-देवरिया मार्ग पर, केशवधाम होते हुए अलीगढ़-मथुरा राजमार्ग पर और चित्रकूट में बांदा-बहराइच राजमार्ग पर पहले ही लागू कर दिया गया है.

लोक निर्माण विभाग के चीफ इंजीनियर और वर्तमान में सेतू निगम के प्रबंध निदेशक पीके कटियार ने कहा कि राजमार्ग के दोनों तरफ उगाने के लिए जिन 34 औषधियों को चुना गया है उनमें भोजन बनाने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली और बैक्टीरिया रोधी गुणों के लिए मशहूर हल्दी शामिल है. साथ ही ब्राह्मी, अश्वगंधा, अनंतमूल, जनोफा, माशपर्णी, सप्तपर्णी, तुलसी और जल मीम जैसे तत्वों के पौधे लगाए जाने हैं. आयुर्वेदिक विशेषज्ञों के अनुसार, ब्राह्मी से स्मरणशक्ति तेज होती है और अश्वगंधा का उपयोग स्वस्थ रहने, अवसाद और हाई ब्लड प्रेशर से लड़ने में किया जाता है.

लोक निर्माण विभाग के चीफ इंजीनियर और वर्तमान में सेतू निगम के प्रबंध निदेशक पीके कटियार ने कहा कि राजमार्ग के दोनों तरफ उगाने के लिए जिन 34 औषधियों को चुना गया है उनमें भोजन बनाने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली और बैक्टीरिया रोधी गुणों के लिए मशहूर हल्दी शामिल है. साथ ही ब्राह्मी, अश्वगंधा, अनंतमूल, जनोफा, माशपर्णी, सप्तपर्णी, तुलसी और जल मीम जैसे तत्वों के पौधे लगाए जाने हैं. आयुर्वेदिक विशेषज्ञों के अनुसार, ब्राह्मी से स्मरणशक्ति तेज होती है और अश्वगंधा का उपयोग स्वस्थ रहने, अवसाद और हाई ब्लड प्रेशर से लड़ने में किया जाता है.

जाहिर है लोक निर्माण विभाग में ऐसे सृजनात्मकता के साथ निर्माण कार्य की नीति को व्यवहार में लाना काफी चुनौतीपूर्ण होगा लेकिन प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य कहते हैं कि हमने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वर्णिम भारत के सपने को साकार करने कासंकल्प लिया है. देश के विकास के लिए उत्तर प्रदेश का विकास जरूरी है और प्रदेश के विकास का आधार बिजली और सड़कें हैं. जिनपर प्रदेश सरकार ने पिछले दो वर्षों में बड़ा काम किया है. इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रदेश सरकार ने बिजली और सड़क पर उल्लेखनीय कार्य किए हैं जिसका असर दिख रहा है. प्रदेश के आने वाले कल की तस्वीर बदल रही है.

मार्ग का नाम :- पुराना राष्ट्रीय मार्ग संख्या-24 (शहरी भाग) (दिल्ली-बरेली-लखनऊ मार्ग)

संस्कृत और चरक से आगे की शिक्षा

12 अगस्त को गूगल ने विक्रम साराभाई की जन्म शताब्दी पर डूडल बनाकर उन्हें याद किया। हमने मंगलयान, चंद्रयान जैसी इसरो की उपलब्धियों पर खूब गर्व बीते बरसों में किया है। लेकिन अंतरिक्ष विज्ञान की इन सफलताओं पर इतराने का जो मौका हमें मिला है, वह किनके कारण मिला है, यह भी हमें समय-समय पर याद कर लेना चाहिए।

नेहरूजी जैसे दूरदृष्टा नेता और विक्रम साराभाई जैसे व्यापक दृष्टिकोण रखने वाले वैज्ञानिकों की वजह से इसरो की नींव रखी गई और देश अंतरिक्ष में कदम बढ़ाता गया। इसरो 15 अगस्त को अपनी स्वर्ण जयंती मनाएगा। यह कैसी विडंबना है कि मिशन मंगल पर बनी फिल्म का जैसा प्रचार हो रहा है, वैसा विक्रम साराभाई की सोच का नहीं होता और नेहरूजी के लिए तो अब अपराधी जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाने लगा है, फिर भी विरोध की आवाज उठाने का जिम्मा कांग्रेस का ही होता है, मानो बाकी राष्ट्र उनके योगदान को भूल ही चुका है या उससे जनता का कोई लेना-देना ही नहीं है। बहरहाल इसरो की अर्द्धशती और विक्रम साराभाई की जन्मशती वाले इस अगस्त महीने में शिक्षा और विज्ञान जगत से कुछ ऐसी खबरें आई हैं, जिन पर जागरूक समाज को विचार करने की जरूरत है। पिछले कुछ बरसों में भारत को विश्वगुरु साबित करने के लिए कई हैरतअंगेज दावे हुए। जैसे रावण के पास पुष्पक ही नहीं बल्कि 24 विमान थे, कौरव टेस्ट ट्यूब बेबी थे, मोर ब्रह्मचारी होता है, मोरनी उसके आंसुओं से गर्भवती होती है, गौ मूत्र और गोबर से कैंसर ठीक होता है और अब इस कड़ी में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री का बयान भी सामने आया है। आईआईटी-बॉम्बे के 57वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए रमेश पोखरियाल निशंक ने दावा किया कि परमाणु और अणु की खोज चरक ऋषि ने की थी। उन्होंने इंजीनियरों की नई पीढ़ी को यह भी बताया कि नासा कह रहा है कि अगर निकट भविष्य में चलता-फिरता कंप्यूटर मुमकिन हो पाया तो यह संस्कृत के कारण ही संभव होगा। नासा ऐसा इसलिए कह रहा है क्योंकि यह एक वैज्ञानिक भाषा है जिसमें शब्दों को ठीक उसी तरह लिखा जाता है जिस तरह से वे बोले जाते हैं। अच्छी बात है कि नासा संस्कृत भाषा का महत्व समझ रहा है। उसकी वैज्ञानिकता को परख रहा है, उसे देववाणी बनाकर केवल पूजा-पाठ के लिए सीमित नहीं रख रहा। इसरो की तरह नासा ने भी अंतरिक्ष विज्ञान में एक से बढ़कर एक उपलब्धियां हासिल की हैं। अंतरिक्ष में नए-नए ग्रहों की खोज से लेकर इंसानों को वहां शोध के लिए भेजना, अंतरिक्ष में चहलकदमी तक करवाने का कारनामा करना, यह सब नासा ने दुनिया भर के वैज्ञानिकों के बूते संभव कर दिखाया है। कई भारतीय भी नासा में कार्यरत हैं, जहां उनकी मेधा का यथोचित उपयोग किया जा रहा है। लेकिन भारत में स्थिति क्या है, इसका अनुमान लोकसभा में सरकार के दिए एक जवाब से लगाया जा सकता है। हाल ही में संपन्न हुए संसद सत्र में लोकसभा में भाजपा सांसद रामचरण बोहरा ने देश के शीर्ष वैज्ञानिक संस्थानों में रिक्त पड़े वैज्ञानिकों के पदों का संस्थान-वार ब्यौरा मांगा था, इसके जवाब में पृथ्वी एवं विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया था कि देश की 70 प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों के 2911 पद खाली हैं। अब ये पद क्यों खाली हैं, कब तक भरे जाएंगे, योग्य व्यक्तियों से भरे जाएंगे या सिफारिशी उम्मीदवार नए तरह के प्रयोग करेंगे, ऐसे तमाम सवालों के जवाब न जाने मिलेंगे या नहीं। इसी संसद सत्र में मानव संसाधन विकास मंत्री ने भारत में अनुसंधान और विकास यानी आरएंडडी पर होने वाले खर्च की जानकारी देते हुए बताया कि आरएंडडी पर पिछले एक दशक में खर्च सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का मात्र 0.7 प्रतिशत रहा है। जो इजरायल, चीन और ब्राजील जैसे देशों के मुकाबले काफी कम है, जहां आरएंडडी पर खर्च जीडीपी का क्रमश- 4.3 प्रतिशत, दो प्रतिशत और 1.2 प्रतिशत रहा है। निशंक जी के मुताबिक इन देशों में निजी क्षेत्र अनुसंधान पर काफी निवेश करते हैं, जबकि भारत में निजी क्षेत्र केवल 30 प्रतिशत निवेश करते हैं। उनके इस जवाब से शायद डॉ. प्रणव मुखर्जी को भी अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा। उन्होंने कुछ दिन पहले यह चिंता व्यक्त की थी कि भारत को विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार नहीं मिला, क्योंकि यहां शोध के लिए अच्छा माहौल नहीं है। वैसे शोध के लिए ही क्यों भारत में तो अब स्कूली शिक्षा भी गरीबों के लिए कठिन होती जा रही है। सरकारी स्कूलों की उपेक्षा और निजी स्कूलों को पिछले दरवाजे से सरकारी मदद के बाद अब एक फैसला ऐसा आया है, जिसकी मार गरीब विद्यार्थियों पर सबसे ज्यादा पड़ेगी। सीबीएसई ने 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं की फीस बढ़ा दी है। करीब पांच साल बाद बढ़ी इस फीस के लिए सीबीएसई का तर्क है कि जेईई मेन, नीट यूजी और यूजीसी नेट जैसी परीक्षाओं के नैशनल टेस्टिंग एजेंसी के अधीन हो जाने से सीबीएसई को इनसे होने वाली कमाई का नुकसान हुआ है, इसकी भरपाई के लिए ऐसा किया गया है। सीबीएसई का दावा है कि %नो प्रॉफिट नो लॉस मार्जिन% बनाए रखने के लिए फीस बढ़ाई गई है। जब शिक्षा को लाभ-हानि के तराजू पर रखकर तौला जाए, तो फिर कहने-सुनने को बचता ही क्या है? वैसे ऑल इंडिया पैरेंट्स असोसिएशन के अध्यक्ष अशोक त्रिपाठी के मुताबिक परीक्षा फीस में बढ़ोतरी असंवैधानिक है और बच्चों के शिक्षा के अधिकार के खिलाफ है। उनका कहना है कि सीबीएसई संविधान के अनुच्छेद 14 के तहत काम करती है, इसलिए उसे अधिक से अधिक बच्चों की शैक्षणिक जरूरतें पूरी करने के लिए काम करना चाहिए। सरकार के इस कदम का विरोध तो हो रहा है, देखना ये है कि सरकार अतीत के महिमामंडन में ही लगी रहेगी या भविष्य के लिए भी कोई सार्थक कदम उठाएगी।

मोदीजी के भाषण के निहितार्थ

राष्ट्रवाद के सहारे राजनीति का क्या फायदा होता है, यह बात मोदीजी से बेहतर कौन समझ सकता है। पिछले कई चुनावों में राष्ट्रवाद ने उन्हें और उनकी पार्टी को जीत दिलाई है। इसलिए जब अपने दूसरे कार्यकाल में पहली बार और बतौर प्रधानमंत्री छठवीं बार लालकिले से देश को संबोधित करने का अवसर मिला, तो उन्होंने हर बात को किसी न किसी तरह देशभक्ति, देशसेवा, राष्ट्रवाद से जोड़ लिया। इस बार लगभग डेढ़ घंटे के भाषण में प्रधामंत्री मोदी ने राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर अपने मन की बात कही। उम्मीद के अनुरूप उन्होंने सबसे पहले अनुच्छेद 370 और तीन तलाक पर अपने फैसले को सराहा और साथ ही पिछली सरकारों, खासकर कांग्रेस पर निशाना साधा। 60 साल बनाम 60 महीने का जुमला पिछले कार्यकाल के साथ ही खत्म हो गया है और अब 70 साल बनाम 70 दिन का जिक्र हुआ। मोदीजी ने लालकिले से कहा कि जो काम 70 साल में नहीं हुआ, उसे हमने 70 दिन से कम समय में कर दिखाया। ऐसी बातों को सुनकर लगता है मानो वे कांग्रेस के साथ एक अंतहीन प्रतियोगिता में लगे हुए हैं। और अपने फैसलों को सही साबित करने के लिए उनकी सबसे बड़ी कसौटी नेहरू-गांधी परिवार के शासन में लिए गए फैसले हैं, जिन्हें वे एक सिरे से गलत साबित करना चाहते हैं। शायद यही वजह है कि मोदीजी ने इस बार रक्षा क्षेत्र में नेहरूजी के एक नीतिगत फैसले को पलटते हुए चीफ आफ डिफेंस स्टाफ की व्यवस्था कायम करने का ऐलान किया। कई पूर्व सैन्य अधिकारी सीडीएस के पक्ष में हैं और कारगिल के बाद से तीनों सेनाओं के बेहतर समन्वय के लिए सीडीएस की मांग की जा रही थी, जो अब पूरी हो गई है। यूं तो आजादी के बाद तक देश में सीडीएस की व्यवस्था थी, लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सैन्य बल का विकेन्द्रीकरण करके चीफ आफ डिफेंस स्टाफ के पद को समाप्त कर दिया था। इस विकेन्द्रीकरण से सेना के तीनों अंगों के बीच संतुलन बिठाया गया, साथ ही लोकतांत्रिक देश में सैन्य तानाशाही के हावी होने के खतरे को भी रोका गया था। हमने पड़ोसी देश पाकिस्तान में देखा है कि किस तरह सैन्य तानाशाही ने लोकतांत्रिक सरकारों का तख्तापलट किया है। हालांकि भारत में सेना ने कभी अपने अधिकारों का अतिक्रमण नहीं किया और कर्तव्यपालन से देशभक्ति की मिसाल कायम की। लेकिन बीते कुछ समय से सेना के जज्बे और हौसले को राष्ट्रवाद के नाम पर भुनाया जा रहा है, इसे प्रचारित करने के लिए प्रायोजित तरीके से फिल्में बनाई जा रही हैं। और अब जबकि राष्ट्रवाद उफान पर है, मोदीजी ने सीडीएस का ऐलान किया है और बहुमत वाली सरकार देश की रक्षाप्रणाली में बड़ा बदलाव जल्द ही कर भी देगी, लेकिन कुछ सवाल हैं जिनके जवाब देशहित की खातिर सरकार को देना ही चाहिए जैसे सीडीएस का कार्यकाल कितना लंबा होगा? उसकी जवाबदेही किसके प्रति होगी? वह प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करेगा या सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति को? उसका मुख्यालय कहां होगा? प्रधानमंत्री कार्यालय में या रक्षा मंत्रालय में? सीडीएस के क्या अधिकार होंगे? क्या उसके पास बजट और संसाधन आबंटित करने की शक्ति होगी? प्रोटोकाल में वह किसके नीचे और किसके ऊपर रहेगा? अभी राष्ट्रपति तीनों सेनाओं के मुखिया होते हैं, सीडीएस की व्यवस्था में राष्ट्रपति के इस अधिकार का क्या होगा? परमाणु हथियारों का नियंत्रण किसके पास होगा? सीडीएस के निरंकुश होने की स्थिति में सरकार क्या करेगी? इन सारे सवालों के जवाब देना या न देना मोदीजी के मन पर है। बहरहाल, सीडीएस के अलावा उन्होंने जनसंख्या विस्फोट के मुद्दे को आश्चर्यजनक तरीके से उठाया और इसे देशसेवा से जोड़ा। भारत की इस गंभीर समस्या के बारे में अमूमन राजनैतिक दल बोलने से बचते हैं, उन्हें संजय गांधी की पहल के बाद कांग्रेस का हश्र याद आ जाता है। अब मोदीजी भारत की बढ़ती आबादी पर रोक के लिए कौन सी नीति या उपाय अपनाते हैं, यह देखना होगा। मोदीजी ने आधी आबादी के लिए जलसंकट का मुद्दा भी

15 अगस्त को उठाया और साढ़े तीन लाख करोड़ के जल जीवन मिशन का ऐलान किया। लेकिन जलसंरक्षण के इस नए ऐलान में भारत की नदियों की दुर्दशा, गंगा सफाई अभियान, गंगा को बचाने के लिए दी जा रही कुर्बानियां, नदी किनारे अवैध रेत उत्खनन ये सारी चिंताएं दबा दी गईं। खुद को गंगापुत्र कहने वाले मोदीजी ने इस बारे में चुप्पी साध ली है कि गंगा की आज हालत क्या है? उनका नमामि गंगे मिशन पांच साल बाद भी अंजाम तक क्यों नहीं पहुंचा। इसी तरह स्वच्छ भारत अभियान की जगह अब गांधीजी को प्लास्टिक मुक्ति से जोड़ दिया गया है। 2 अक्टूबर से सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक का आह्वान प्रधानमंत्री ने किया है।

इसके अलावा वन नेशन, वन इलेक्शन, लकी कल के लिए लोकल, स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा जैसी बातें प्रधानमंत्री के भाषण का अहम हिस्सा रहीं। 90 मिनट में 130 करोड़ की आबादी वाले भारत की समस्याओं और अपेक्षाओं को तो समेटा नहीं जा सकता। फिर भी मोदीजी अपनी सुविधा से खूब बोले और जिन मुद्दों पर असुविधा थी, जैसे जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र का दमन, भीड़ की हिंसा, सांप्रदायिक तनाव, उन पर चुप्पी साध ली। बाकी जनता पर निर्भर है कि वे कही-अनकही बातों में अपना और देश का भविष्य देख ले।

बड़ी खबर, बड़े बोल

समय बहुत कम है, इसके बावजूद आजादी के 75वें साल में नये संसद भवन के निर्माण का कार्य शुरू होता तो बहुत अच्छा होता ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

दलितों और पिछड़े वर्गों के आरक्षण को समाप्त करने की संघ और भारतीय जनता पार्टी की सुनियोजित चाल है।

पवन खेड़ा - कांग्रेस प्रवक्ता

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बघेल और पार्टी के राज्य प्रभारी पी. एल. पुनिया छत्तीसगढ़ उप-चुनाव पर ध्यान केंद्रित करें

सोनिया गांधी
- कांग्रेस अध्यक्ष

राजीव गांधी की दूरदर्शी नीतियों से भारत के निर्माण में मदद मिली। आज हम राजीव गांधी जी की 75वीं जयंती मना रहे हैं।

राहुल गांधी
- कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष

आरक्षण मानवतावादी सवैधानिक व्यवस्था है और इससे छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मायावती - बसपा सुप्रीमो

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान देश ही नहीं बल्कि दुनिया का सिरमौर बनने की क्षमता रखता

अशोक गहलोत
- राजस्थान मुख्यमंत्री

क्यों सुभाष चंद्र बोस की मौत का दावा आधुनिक भारत के सबसे बड़े रहस्यों में से एक है

कहा जाता है कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत 1945 में ताइवान में हुए विमान हादसे में हो गई थी. लेकिन इस बात पर संदेह करने के कारण मौजूद हैं

फैजाबाद शहर के सिविल लाइन्स इलाके में स्थित 'राम भवन' के बारे में 16 सितंबर 1985 से पहले न के बराबर लोग ही जानते थे. उस मकान में लंबे समय से साधु जैसे लगने वाले एक बुजुर्ग रहते थे जिनके बारे में स्थानीय निवासियों को कुछ खास जानकारी नहीं थी. जिस दिन उनकी मृत्यु हुई और अंतिम संस्कार के बाद उनके कमरे को खंगाला गया तो कई लोगों की आंखें खुली-की-खुली रह गई. उनके कमरे से लोगों को कई ऐसी चीजें मिलीं जिनका ताल्लुक सीधे तौर पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस से जुड़ता था. इनमें नेताजी की पारिवारिक तस्वीरों से लेकर आजाद हिंद फौज की वर्दी, जर्मन, जापानी तथा अंग्रेजी साहित्य की कई किताबें और नेताजी की मौत से जुड़े समाचार पत्रों की कतरनें शामिल थीं. इसके अलावा वहां से और भी कई ऐसे दस्तावेज बरामद हुए जिनके आधार पर एक बड़े वर्ग ने दावा किया कि वे कोई आम बुजुर्ग नहीं बल्कि खुद नेताजी सुभाष चंद्र बोस ही थे.

इस दावे को सही साबित नहीं किया जा सका बल्कि इसने नेताजी की गुमनामी की गुत्थी को एक बार फिर से कुछ और उलझा दिया. इससे पहले बहुत से लोग एक विमान हादसे को उनकी मृत्यु का कारण मानते थे तो कइयों को लगता था कि वे किसी बड़ी राजनीतिक साजिश का शिकार हुए हैं. कुल मिलाकर नेताजी को लेकर अब तक अलग-अलग तरह की इतनी सारी बातें सामने आ चुकी हैं, लेकिन उनके गायब होने का रहस्य आज भी जस का तस बना हुआ है.

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की गुमशुदगी के मामले में यह अब तक का सबसे मजबूत तर्क माना जाता है. इसके मुताबिक आज से 70 साल पहले 18 अगस्त 1945 को ताइवान के नजदीक हुई एक हवाई दुर्घटना में नेताजी की मौत हो गई थी. भारत सरकार तथा इतिहास की कुछ किताबें भी इसी हवाई दुर्घटना को नेता जी की मुत्यु का कारण बताती हैं. बताया जाता है नेता जी को अंतिम बार टोक्यो हवाई अड्डे पर ही देखा गया था और वे वहीं से उस विमान में बैठे थे.

इस घटना के संबंध में दो अलग-अलग ऐसी बातें भी सामने आई जिनके चलते इसकी सत्यता पर संदेह खड़ा हो गया. इनमें पहली बात तो यह थी कि नेता जी का शव कहीं से भी बरामद नहीं हो सका और दूसरी यह कि कई लोगों के मुताबिक उस दिन ताइवान के आस-पास कोई हवाई दुर्घटना घटी ही नहीं थी. खुद ताइवान सरकार के दस्तावेजों में भी उस दिन हुई किसी हवाई दुर्घटना का जिक्र नहीं है. ऐसे में कई लोग आज भी उनकी मौत की वजह कुछ और मानते हैं. नेताजी के जीवन पर 'मृत्यु से वापसी, नेताजी का रहस्य' नाम की पुस्तक लिखने वाले अनुज धर भी यही मानते हैं कि उनकी मौत 18 अगस्त 1945 को नहीं हुई थी.

हालांकि नेता जी की बेटी अनीता बोस फाफ विमान दुर्घटना वाली बात से इत्तेफाक रखते हुए इसे ही उनकी मौत का कारण बताती हैं. जर्मनी में रहने वाली 74 वर्षीय अनीता, नेताजी की ऑस्ट्रियन पत्नी एमिली शेंकल से हुई उनकी इकलौती संतान हैं.

लेकिन अनीता के ऐसा मानने के बाद भी इस बात पर संदेह करने के कई कारण हैं. एक खबर के अनुसार उस कथित विमान हादसे के समय नेताजी के साथ मौजूद कर्नल हबीबुर रहमान ने इस बारे में आजाद हिंद सरकार के सूचना मंत्री एसए नैयर, रूसी तथा अमेरिकी जासूसों और शाहनवाज समिति के सामने अलग-अलग बयान दिए थे, जिनके चलते भी उस हादसे की सत्यता पर सवाल खड़े होते हैं.

राजनीतिक साजिश के शिकार

कई लोग इस बात को भी मानते हैं कि नेता जी को किसी बड़ी राजनीतिक साजिश के तहत मारा गया था. राजनीतिक साजिश को नेता जी की मौत का कारण बताने वाले लोग दो अलग-अलग संभावनाओं की तरफ इशारा करते हैं. पहली संभावना के मुताबिक कुछ लोग मानते हैं कि उन्हें ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्त एजेंटों की सहायता से मारा था, जबकि दूसरी संभावना के मुताबिक कुछ लोग नेता जी की मौत में रूस का हाथ देखते हैं.

गुमनामी बाबा (भगवन) की कहानी

इस रिपोर्ट की शुरुआत में फैजाबाद के 'राम भवन' में रहने वाले जिन बुजुर्ग शख्स का जिक्र किया गया है, वे ही गुमनामी बाबा और भगवन जी के नाम से प्रसिद्ध हैं. उनके पास से मिले नेताजी से जुड़े दस्तावेजों के आधार पर कई लोग आज भी यही मानते हैं कि वे नेता जी ही थे और भारत की आजादी के बाद जानबूझकर वेश बदल कर रह रहे थे. बताया जाता है कि वे सत्तर के दशक की शुरुआत में फैजाबाद आए थे. आजाद हिंद फौज में शामिल रहे बहुत से सैनिक और अधिकारी भी कई मौकों पर यह दावा कर चुके हैं कि नेताजी आजादी के बाद तक भी जीवित थे. इन सिपाहियों ने नेताजी से गुप्त मुलाकातों का दावा भी किया है.

लेकिन फिर सवाल उठता है कि वे कभी सामने क्यों नहीं आए? इस बारे में कुछ लोग एक अजीब किस्म की दलील देते हैं. इस दलील के मुताबिक संभवतः आजादी के समय ब्रिटिश और भारत सरकार के बीच ऐसा कोई गुप्त समझौता हुआ होगा जिसमें यह शर्त रखी गई होगी कि नेताजी के वापस लौटने की सूरत में उन्हें अंग्रेजों को सौंप दिया जाएगा. ऐसे में हो सकता है कि वे इसीलिए दुनिया के सामने नहीं आए होंगे. हालांकि इस समझौते का कोई भी साक्ष्य अभी तक सामने नहीं आ सका है. लिहाजा यह तर्क भी रहस्य की श्रेणी से आगे नहीं बढ़ पाया है.

इस घटना के संबंध में दो अलग-अलग ऐसी बातें भी सामने आईं जिनके चलते इसकी सत्यता पर संदेह खड़ा हो गया. इनमें पहली बात तो यह थी कि नेता जी का शव कहीं से भी बरामद नहीं हो सका और दूसरी यह कि कई लोगों के मुताबिक उस दिन ताइवान के आस-पास कोई हवाई दुर्घटना घटी ही नहीं थी. खुद ताइवान सरकार के दस्तावेजों में भी उस दिन हुई किसी हवाई दुर्घटना का जिक्र नहीं है. ऐसे में कई लोग आज भी उनकी मौत की वजह कुछ और मानते हैं.

जांच समितियां और रिपोर्ट

नेता जी सुभाष चंद्र बोस की गुमशुदगी का रहस्य सुलझाने के लिए भारत सरकार अब तक तीन आयोगों का गठन कर चुकी है. इन तीनों आयोगों की रिपोर्ट सामने आने के बाद भी नेता जी की मौत को लेकर अंतिम निष्कर्ष जैसा कुछ भी हासिल नहीं हो सका है. नेता जी की मौत का पता लगाने के लिए सबसे पहले 1956 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने शाहनवाज खान के नेतृत्व में एक जांच समिति का गठन किया था. इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में विमान हादसे की बात को सच बताते हुए कहा कि नेताजी की मौत 18 अगस्त 1945 को ही हुई थी. लेकिन इस समिति में बतौर सदस्य शामिल रहे नेताजी के भाई सुरेश चंद्र बोस ने इस रिपोर्ट को नकारते हुए तब आरोप लगाया था कि सरकार कथित विमान हादसे को जानबूझ कर सच बताना चाहती है.

इसके बाद सरकार ने सन 1970 में न्यायमूर्ति जीडी खोसला की अध्यक्षता में एक और आयोग बनाया. इस आयोग ने अपने पूर्ववर्ती आयोग की राह पर चलते हुए विमान दुर्घटना वाली बात पर ही अपनी मुहर लगाई. लेकिन इसके बाद 1999 में उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश मनोज मुखर्जी की अध्यक्षता वाले एक सदस्यीय आयोग ने इन दोनों समितियों के उलट रिपोर्ट देते हुए विमान हादसे वाले तर्क को ही खारिज कर दिया. 2006 में सामने आई मुखर्जी आयोग की रिपोर्ट में नेताजी की मौत की पुष्टि तो की गई थी, लेकिन आयोग के मुताबिक इसका कारण कुछ और था, जिसकी अलग से जांच किए जाने की जरूरत है. मुखर्जी आयोग की इस रिपोर्ट को तत्कालीन केंद्र सरकार ने खारिज कर दिया था.

फाइल लीक और विवाद

अप्रैल 2015 में इस मुद्दे पर आईबी की दो फाइलों के सार्वजनिक हो जाने के बाद विवाद खड़ा हो गया था. इन फाइलों के मुताबिक आजाद भारत में करीब दो दशक तक आईबी ने नेताजी के परिवार की जासूसी की थी. इस जासूसी का असल उद्देश्य किसी को नहीं मालूम. लेकिन अटकलें और आरोप लगाए जा रहे थे कि यह पंडित जवाहरलाल नेहरू के इशारे पर की गई थी, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं नेताजी जीवित तो नहीं हैं और अचानक सामने आकर उनके लिए चुनौती तो नहीं बन जाएंगे. इससे पहले उसी साल अपनी जासूसी होने का पता लगने के बाद से अचरज में पड़े नेताजी के परिजनों ने केंद्र सरकार से इस पूरे मामले की जांच करने की मांग की थी.

उसी साल फरवरी में आरटीआई कार्यकर्ता सुभाष अग्रवाल ने सूचना के अधिकार के तहत केंद्र सरकार से सुभाष चंद्र बोस की मौत से जुड़ी गोपनीय फाइलों को सार्वजनिक करने की मांग की थी. इस पर सरकार का जवाब आया था कि इन फाइलों के सार्वजनिक होने से कुछ देशों के साथ भारत के मैत्री संबंध खराब हो सकते हैं. इस जवाब ने नेता जी की मौत को लेकर नए सवाल खड़े कर दिए थे. मसलन क्या नेताजी की मौत के पीछे किसी ऐसे देश का हाथ था जिससे भारत के दोस्ताना रिश्ते हैं? भारतीय जनता पार्टी के नेता सुब्रमण्यम स्वामी जैसे कई लोगों का दावा था कि यह देश रूस है. स्वामी का कहना था कि द्वितीय विश्वयुद्ध में आजाद हिंद फौज की हार के बाद जब नेताजी रूस पहुंचे तो नेहरू के कहने पर स्टालिन ने उन्हें बंदी बना लिया था, जिसके बाद उन्हें साइबेरिया में फांसी दे दी गई. इस दौरान नेताजी की प्रपौत्री राज्यश्री चौधरी ने भी यही कहा था. सुब्रमण्यम स्वामी का यह भी कहना था कि नेताजी के परिजनों की जासूसी किए जाने के पीछे नेहरू का ही हाथ था. उनके मुताबिक नेहरू को स्टालिन पर यकीन नहीं था और यही वजह है कि नेताजी की मौत की सूचना मिलने के बाद भी उन्होंने उनके परिजनों की जासूसी जारी रखी.

गोपनीय फाइलें सार्वजनिक होने के बाद भी रहस्य बरकरार

इसके बाद 2015 में पहले पश्चिम बंगाल सरकार ने नेताजी की मौत से जुड़ी गोपनीय फाइलें सार्वजनिक कीं और 2016 में केंद्र सरकार ने. लेकिन इससे भी नेताजी की मौत का रहस्य नहीं सुलझ पाया. पश्चिम बंगाल सरकार ने जो 64 फाइलें सार्वजनिक कीं उनमें से एक के मुताबिक भारतीय खुफिया एजेंसियों को बोस के जीवित और रूस में होने का शक था. इसके बाद 2016 में केंद्र सरकार ने जो फाइलें सार्वजनिक कीं उनमें से एक में यह कहा गया कि सुभाष चंद्र बोस के 1945 और इसके बाद सोवियत संघ में ठहरने के बारे में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है. यह बात रूसी फेडरेशन के विदेश मंत्रालय द्वारा मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास को आठ जनवरी 1992 को लिखे गए पत्र के हवाले से कही गई थी.

इसके बाद मई 2017 में केंद्र सरकार ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) के तहत पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत साल 1945 में ताइवान में हुए उस प्लेन हादसे में हुई थी. केंद्रीय गृह मंत्रालय का कहना था, 'शाहनवाज समिति, जस्टिस खोसला आयोग और जस्टिस मुखर्जी आयोग की रिपोर्टों के बाद सरकार इस नतीजे पर पहुंची है कि नेताजी 1945 में हुए विमान हादसे में मारे गए थे.' सरकार के जवाब पर नेताजी के परिवार ने नाराजगी जताई थी. सुभाष चंद्र बोस के पड़पोते चंद्र बोस ने कहा कि आखिर कैसे सरकार बिना किसी ठोस सबूत के नेताजी की मौत का दावा कर सकती है.

यानी यह रहस्य अभी तक रहस्य ही बना हुआ है.

भारतीय महिला हाकी टीम ने जापान को 2-1 से हराया

भारतीय टीम ने आक्रामक शुरूआत की और पहले 10 मिनट में ही उसे कुछ मौके मिल गये। दोनों टीमें ओलंपिक खेलों के दिशा-निर्देशों के अनुसार 16 खिलाड़ियों के साथ खेल रही थीं। दोनों ने समय समय पर पूरे मैच के दौरान खिलाड़ियों को अंदर बाहर किया।

तोक्यो।

भारतीय महिला हाकी टीम ने शनिवार को यहां मेजबान जापान पर 2-1 की जीत से ओलंपिक परीक्षण प्रतियोगिता में अपना अभियान शुरू किया। भारत ने पेनल्टी कार्नर विशेषज्ञ गुरजीत कौर की मदद से नौंवे ही मिनट में बढ़त बना ली थी लेकिन मेजबान टीम ने 16वें मिनट में अकी मितसुहासी के मैदानी गोल से 1-1 से बराबरी हासिल की। हालांकि गुरजीत ने फिर 35वें मिनट में पेनल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 2-1 से आगे कर दिया जो निर्णायक रहा।

भारतीय टीम ने आक्रामक शुरूआत की और पहले 10 मिनट में ही उसे कुछ मौके मिल गये। दोनों टीमें ओलंपिक खेलों के दिशानिर्देशों के अनुसार 16 खिलाड़ियों के साथ खेल रही थीं।

दोनों ने समय समय पर पूरे मैच के दौरान खिलाड़ियों को अंदर बाहर किया। जापान को स्थानापन्न खिलाड़ी का फायदा हुआ और 29 साल की मितसुहासी ने टीम को बराबरी दिलायी। भारतीय टीम ज्यादा हमले बोल रही थी, हालांकि दोनों टीमें एक दूसरे की रणनीति को अच्छी तरह समझ रही थी क्योंकि दोनों पिछले दो वर्षों में आपस में काफी बार खेली हैं। इससे हाफ टाइम तक स्कोर 1-1 रहा। तीसरे क्वार्टर में भारतीय टीम ने शुरू में दबदबा बनाया और 35वें मिनट में एक और पेनल्टी कार्नर हासिल किया। 23 वर्षीय गुरजीत ने इस मौके का फायदा उठाकार गोल कर दिया। मेजबान टीम ने बचे हुए समय में बराबरी करने की कोशिश की लेकिन उसकी खिलाड़ी मौकों का फायदा नहीं उठा सकीं।

पूर्व भारतीय बल्लेबाज चंद्रशेखर ने की आत्महत्या, पुलिस अधिकारियों ने बताई यह वजह

चेन्नई।

पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज और राष्ट्रीय चयनकर्ता वीबी चंद्रशेखर ने कर्ज के कारण तनाव के चलते आत्महत्या की। गुरुवार को शुरूआती रिपोर्ट के अनुसार उनका निधन दिल का दौरा पड़ने के कारण हुआ था। लेकिन वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के अनुसार चंद्रशेखर ने कर्ज के कारण गुरूवार को यहां अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस अधिकारी ने कहा कि वह इस कर्जे के कारण काफी तनाव में थे। चंद्रशेखर की तमिलनाडु प्रीमियर लीग में एक टीम 'वीबी कांची वीरन्स' थी, जिसका चौथा चरण गुरूवार को समाप्त हुआ।

तमिलनाडु के इस पूर्व बल्लेबाज का छह दिन बाद 58वां जन्मदिन था। उनके परिवार में पत्नी और दो बेटियां हैं। चंद्रशेखर ने 1988 से 1990 के बीच सात वनडे खेले थे जिनमें उन्होंने 88 रन बनाये थे लेकिन घरेलू स्तर पर उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया तथा 81 मैचों में 4999 रन बनाये जिसमें नाबाद 237 रन उनका उच्चतम स्कोर रहा। भारतीय क्रिकेट जगत ने उनके निधन पर हैरानी व्यक्त की।

पूर्व भारतीय कप्तान के श्रीकांत ने बीते समय में उनके साथ कई बार पारी का आगाज किया था, उन्होंने कहा कि वह उनके निधन से काफी हैरत में हैं। भारत और चेन्नई सुपरकिंग्स के खिलाड़ी सुरेश रैना और हरभजन सिंह ने शोक व्यक्त किया। वह आईपीएल टीम चेन्नई सुपरकिंग्स के परिचालन निदेशक और चयनकर्ता भी थे, टीम ने भी ट्विटर हैंडल पर दुख जताया।

लिली की बराबरी के बाद लियोन ने कहा- उपलब्धियों के लिये नहीं खेलता

इससे वह आस्ट्रेलिया के सर्वकालिक विकेट चटकाने वाले गेंदबाजों में केवल लेग स्पिनर शेन वार्न (708) और तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्रा (563) से पीछे तीसरे स्थान पर हैं। ये दोनों गेंदबाज संन्यास ले चुके हैं।

लंदन।

आफ स्पिनर नाथन लियोन ने टेस्ट क्रिकेट में डेनिस लिली के 355 विकेट की बराबरी के बाद कहा कि वह निजी उपलब्धियों के बारे में नहीं बल्कि आस्ट्रेलिया के लिये टेस्ट मैच और श्रृंखलायें जीतने के बारे में सोचते हैं। आस्ट्रेलिया ने एशेज श्रृंखला के दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन इंग्लैंड को पहली पारी में 258 रन पर समेट दिया जिसमें लियोन ने 68 रन देकर तीन विकेट झटके। इस तरह उन्होंने लिली के 355 विकेट की बराबरी की। इससे वह आस्ट्रेलिया के सर्वकालिक विकेट चटकाने वाले गेंदबाजों में केवल लेग स्पिनर शेन वार्न (708) और तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्रा (563) से पीछे तीसरे स्थान पर हैं। ये दोनों गेंदबाज संन्यास ले चुके हैं। लियोन ने कहा, मैंने हमेशा ही कहा है कि मैं निजी उपलब्धियों के बारे में नहीं सोचता। मैं सिर्फ आस्ट्रेलिया के लिये टेस्ट मैच जीतने या टेस्ट श्रृंखला जीतने पर ध्यान लगाता हूं। इकतीस साल के इस गेंदबाज ने कहा, ''मुझे इसके बारे में सोचने का कभी समय ही नहीं मिला।

उन्होंने कहा, ''मैं खुद को वार्न, मैकग्रा, लिली के साथ रखे जाने से असहज सा महूसस करता हूं। मेरी निगाहों में ये सभी महान खिलाड़ी हैं और मैं सिर्फ 'आफ ब्रेक' गेंदबाजी करने वाला खिलाड़ी हूं जो आस्ट्रेलियाई प्रशंसकों को अपनी क्रिकेट टीम पर गर्व महसूस कराने की कोशिश कर रहा हूं।

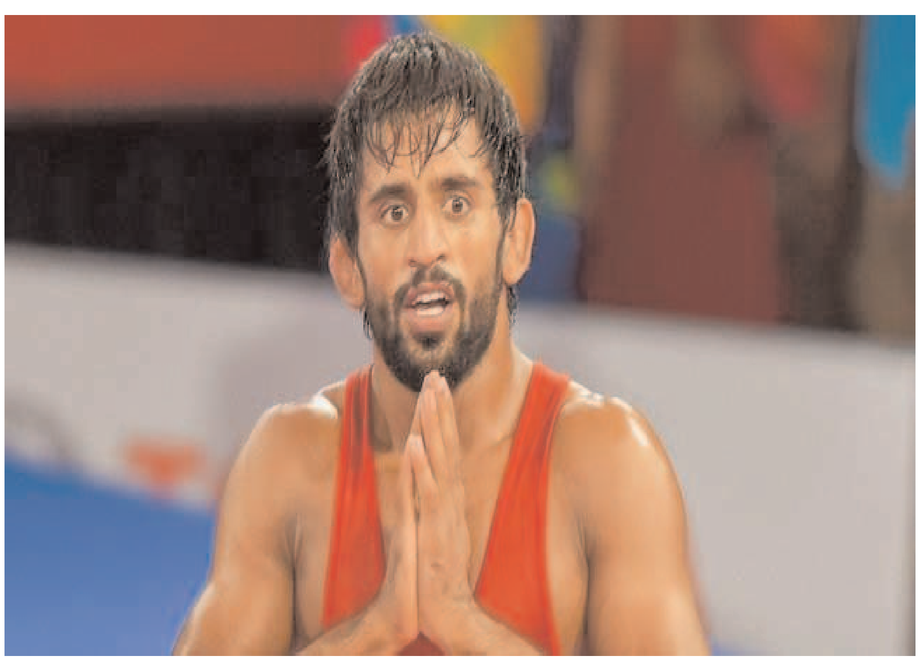

बजरंग पूनिया खेल रत्न पुरस्कार के लिये नामांकित हुए

नयी दिल्ली।

एशिया और राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदकधारी पहलवान बजरंग पूनिया को शुक्रवार को देश के सर्वोच्च खेल सम्मान - राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार के लिये नामांकित किया गया। उनके नाम पर फैसला 12 सदस्यीय चयन समिति ने दो दिवसीय बैठक के शुरूआती दिन में लिया। पैनल में बाईचुंग भूटिया और एम सी मेरीकाम भी शामिल हैं। इसकी जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने पीटीआई से कहा, ''बजरंग को खेल रत्न पुरस्कार के लिये चुना गया। उनके नाम पर फैसला सर्वसम्मति से हुआ।'' सूत्र ने यह भी कहा कि 12 सदस्यीय पैनल शनिवार को अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कार के नाम पर फैसला करने के अलावा शीर्ष सम्मान के लिये एक और एथलीट का नाम चुन सकती है। बजरंग अभी जार्जिया में ट्रेनिंग कर रहे हैं, उन्होंने कहा, ''इस पुरस्कार के लिये मेरे पास उपलब्धियां थीं। मैंने हमेशा ही कहा कि यह पुरस्कार सबसे हकदार खिलाड़ी को ही मिलना चाहिए। ''

सूत्र ने यह भी कहा कि 12 सदस्यीय पैनल शनिवार को अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कार के नाम पर फैसला करने के अलावा शीर्ष सम्मान के लिये एक और एथलीट का नाम चुन सकती है।

त्शेरिंग ने एक फेसबुक पोस्ट में लिखा, ''मैं दोनों देशों के लिए मित्रता के नये अध्याय खुलते देख रहा हूं। यद्यपि आज के लिए मैं भारत के लोगों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देता हूं। हम एक शांतिपूर्ण और समृद्ध भारत के लिए प्रार्थना करते हैं।''

नरेंद्र मोदी में भारत को आगे ले जाने के अच्छे इरादे हैं- भूटानी प्रधानमंत्री

थिम्पू।

भूटान के प्रधानमंत्री लोताय त्शेरिंग ने बृहस्पतिवार को भारत के 73वें स्वतंत्रता दिवस पर बधाई दी और प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक ऐसा व्यक्ति बताया जिनके अपने देश को आगे ले जाने के ''अच्छे इरादे'' हैं। त्शेरिंग की यह टिप्पणी मोदी की 17..18 अगस्त को भूटान की दो दिवसीय यात्रा से पहले आयी है जिस दौरान दोनों रणनीतिक सहयोगी देश अपनी साझेदारी में विविधता लाने के तरीकों का पता लगाएंगे। त्शेरिंग ने एक फेसबुक पोस्ट में लिखा, ''मैं दोनों देशों के लिए मित्रता के नये अध्याय खुलते देख रहा हूं। यद्यपि आज के लिए मैं भारत के लोगों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देता हूं। हम एक शांतिपूर्ण और समृद्ध भारत के लिए प्रार्थना करते हैं।'' उन्होंने नयी दिल्ली में मोदी के साथ अपनी दो बैठकों को याद करते हुए कहा कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नेता इतनी नम्रता और स्वाभाविक तरीके से सामने आया। त्शेरिंग ने मोदी की भूटान यात्रा को एक सम्मान बताते हुए कहा कि उनका स्वागत करना गर्व की बात होगी, न केवल भारत के प्रधानमंत्री के रूप में बल्कि एक महान मनुष्य के तौर पर जो न केवल अपने देश बल्कि आगे के लिए भी अच्छा सोचते हैं। उन्होंने कहा, ''मुझे इसका भी भरोसा है कि भूटान को उनके रूप में एक अच्छा मित्र मिला है। दो दिनों में वह देश की यात्रा करेंगे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सम्मान की बात है।'' त्शेरिंग ने साथ ही एक पुस्तक के बारे में अपने विचार साझा किये जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा है। उन्होंने मोदी द्वारा लिखित 'एग्जाम वारियर्स' के बारे में टिप्पणी करते हुए सवाल किया, ''ऐसे व्यक्ति जिसे अरबों लोगों के बारे में सोचना है और उनका प्रतिनिधित्व वैश्विक मंच पर करना है, वह बच्चों को परीक्षा का सामना करने के लिए तैयार करने के लिए भी समय निकालते हैं। क्या यह एक अच्छे नेता के गुण नहीं हैं?''

रैली में शामिल छात्र जोनाथन ने कहा कि बहुत अधिक गर्मी के साथ ही बारिश भी हो रही है। ऐसे में रैली में शामिल होना किसी चुनौती से कम नहीं है। इसके बावजूद हम यहां हैं क्योंकि हमारे पास कोई चारा नहीं है। जब तक यह सरकार हमें हमारे अधिकार और इज्जत नहीं देती, यह आंदोलन जारी रहेगा।

हांगकांग में प्रदर्शनकारियों ने फिर की बड़ी रैली, बरसते पानी में जुटे एक लाख लोग

हांगकांग।

हांगकांग में रविवार को लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनकारियों ने एक बार फिर से बड़ी रैली का आयोजन किया। बारिश के बावजूद इस रैली में करीब एक लाख लोगों ने हिस्सा लिया। मार्च की अनुमति नहीं मिलने की वजह से सभी प्रदर्शनकारी विक्टोरिया पार्क में इकट्ठा हुए। भीड़ बहुत ज्यादा होने की वजह से बड़ी संख्या में लोग पार्क के बाहर की सड़कों पर खड़े होकर प्रदर्शन कर रहे थे। कुछ लोगों ने शहरी के वित्तीय केंद्र तक मार्च भी किया।

रैली में शामिल छात्र जोनाथन ने कहा कि बहुत अधिक गर्मी के साथ ही बारिश भी हो रही है। ऐसे में रैली में शामिल होना किसी चुनौती से कम नहीं है। इसके बावजूद हम यहां हैं क्योंकि हमारे पास कोई चारा नहीं है। जब तक यह सरकार हमें हमारे अधिकार और इज्जत नहीं देती, यह आंदोलन जारी रहेगा।

संदिग्धों और अपराधियों को मुकदमे के लिए चीन प्रत्यर्पित किए जाने से संबंधित कानून के विरोध में जून में यहां विरोध प्रदर्शन शुरू हुए थे। भारी विरोध के चलते हांगकांग की मुख्य कार्यकारी कैरी लाम ने बिल निलंबित कर दिया है।

लेकिन इस बिल का विरोध व्यापक होकर अब लोकतंत्र समर्थक आंदोलन में तब्दील हो गया है। प्रदर्शनकारी बिल वापस लेने के साथ ही लाम के इस्तीफे और लोकतांत्रिक सुधारों की भी मांग कर रहे हैं।

पिछले हफ्ते प्रदर्शनकारियों ने हांगकांग एयरपोर्ट को घेर लिया था जिसके चलते कई उड़ानें रद्द करनी पड़ी थीं। इसके बाद प्रदर्शनकारियों को मिल रहे समर्थन में कमी आने की आशंका थी। लेकिन जमीनी स्तर पर ऐसा नहीं दिखा। शनिवार की रैली में बड़ी संख्या में बुजुर्ग भी शामिल हुए थे।

प्रदर्शनकारियों ने हांगकांग को आजाद करो, लोकतंत्र अभी चाहिए, लाम इस्तीफा दें और स्वतंत्रता के लिए लड़ो, हांगकांग के साथ खड़े रहें के नारे लगाए थे। रैली में शामिल इतिहास की शिक्षिका ने कहा, मैं हर बार आऊंगी। मुझे नहीं पता यह कब खत्म होगा। हम फिर भी लड़ेंगे।

कई रातें जागकर श्रद्धा ने सीखे अपने तेलुगु डायलॉग्स, प्रभास ने भी की मदद

श्रद्धा बताती हैं, 'एक तो फिल्म की शूटिंग शुरू होने से पहले हैदराबाद में पूरी टीम के साथ कई रीडिंग सेशन हुए। वहां भी लैंग्वेज का सुर पकड़ने में आसानी हुई। यह जरूर है कि अलग लैंग्वेज सीखना बच्चों का खेल नहीं, लेकिन वहां की टीम और डायलेक्ट कोच की मदद से मैं अपने डायलॉग तेलुगु में ना सिर्फ बोल सकी बल्कि समझ भी सकी।

श्रद्धा कपूर अपकमिंग फिल्म साहो में क्राइम ब्रांच ऑफिसर अमृता नायर के रोल में नजर आएंगी। इस बाइलिंगुअल फिल्म की शूटिंग के बाद उन्होंने अपनी ओर से स्पष्ट कर दिया था कि वे फिल्म की तेलुगु डबिंग के लिए किसी और की मदद नहीं लेंगी। वे इसे खुद तेलुगु में डब करेंगी ठीक उसी तरह जैसे प्रभास ने हिंदी वर्जन के डायलॉग खुद ही डब किए हैं। हालांकि, यह श्रद्धा के लिए उतना आसान नहीं रहा पर उन्होंने इसके लिए काफी मेहनत की है।

कितना हुआ फायदा

ये सब करने के बाद अब आलम यह है श्रद्धा आधे पेज के तेलुगु डायलॉग बिना रुके और बिना देखे बोल लेती हैं। उन्हें कई तेलुगु डायलॉग तो कंठस्थ हो चुके हैं। ऐसे में उन्हें अपने डायलॉग को डब करने में कोई दिक्कत भी नहीं हुई।

श्रद्धा बताती हैं, 'एक तो फिल्म की शूटिंग शुरू होने से पहले हैदराबाद में पूरी टीम के साथ कई रीडिंग सेशन हुए। वहां भी लैंग्वेज का सुर पकड़ने में आसानी हुई। यह जरूर है कि अलग लैंग्वेज सीखना बच्चों का खेल नहीं, लेकिन वहां की टीम और डायलेक्ट कोच की मदद से मैं अपने डायलॉग तेलुगु में ना सिर्फ बोल सकी बल्कि समझ भी सकी। अब महसूस होता है कि लैंग्वेज टफ मामला तो है, लेकिन उस पर पकड़ बनाई जा सकती है। यह मेरे लिए काफी चैलेंजिंग फिल्म रही।

बतौर एक्टर फायदेमंद है लैंग्वेज सीखना

बहरहाल, साउथ का रुख करने वालों में श्रद्धा कपूर के अलावा आलिया भट्ट भी हैं। कई और बड़ी एक्ट्रेसेज को भी इन दिनों वहां के मेकर्स अप्रोच कर रहे हैं। इस दीवार के टूटने की वजह बताते हुए श्रद्धा कहती हैं, एक तो वहां से हमें अच्छी स्क्रिप्ट्स अप्रोच की जा रही हैं। दूसरा वहां भी बेहतरीन डायरेक्टर्स की फौज है। कलाकार के तौर पर आपको अलग तरह के वर्क एटमोस्फेयर में काम करने का मौका मिलता है। नई लैंग्वेज सीखते हैं और बतौर एक्टर आप के लिए यह बड़ा फायदेमंद होता है।'

स्त्री 2 करने को हैं तैयार

वहीं इन दिनों चर्चाहै कि फिल्म स्त्री 2 की भी तैयारी की जा रही है। इस बारे में श्रद्धा कहती हैं कि मैंने भी सुना तो है कि उसके राइटर्स राज और डीके ने फिल्म का पार्ट टू लिखा है। हालांकि अभी तक मुझे उसके लिए अप्रोच नहीं किया गया है पर अगर वह मेरे पास आती है तो मैं यकीनन करना चाहूंगी।

स्टाइलिश सेट पर स्टाइलिश अंदाज में एंट्री करेंगे अमिताभ बच्चन, और क्या होगा खास?

छोटे पर्दे का सबसे चर्चित और पॉपुलर रिएलिटी टीवी शो कौन बनेगा करोड़पति सोमवार रात (19 अगस्त) से शुरू होने जा रहा है. इसे सोमवार से शुक्रवार को रात 9 बजे सोनी टीवी पर प्रसारित किया जाएगा. सोनी टीवी के ट्विटर हैंडल से शो का नया प्रोमो रिलीज किया जा चुका है जिसमें अमिताभ बच्चन शो में स्टाइलिश अंदाज में एंट्री करने को लेकर बात कर रहे हैं. इस प्रोमो वीडियो को काफी पसंद किया जा रहा है और इसे खूब शेयर किया गया है.

प्रोमो वीडियो में अमिताभ बच्चन कहते हैं कि सोनी वालों ने सब कुछ नया बनाया है. जब सेट मे इतनी स्टाइल है तो मेरी एंट्री में भी थोड़ी स्टाइल होनी चाहिए. इसके बाद अमिताभ बच्चन इस नए और आकर्षक सेट पर अपने कोट को ठीक करते हुए एंट्री लेते हैं. अमिताभ कहते हैं, ÷अच्छा लगा ना? बहुत मजा आएगा. सोमवार से आप और हम मिलकर खेलेंगे कौन बनेगा करोड़पति. रात 9 बजे.÷

वीडियो के कैप्शन में सोनी टीवी ने लिखा, ÷खेल वही, अंदाज नया. अमिताभ बच्चन लौट रहे हैं केबीसी के नए सीजन के साथ कल से.÷ जाहिर है कि इस नए सीजन में काफी कुछ नया होने जा रहा है. हालांकि क्या खेल के नियमों और इनाम की धनराशि में भी कुछ परिवर्तन किए जाएंगे ये अब तक खुलासा नहीं किया गया है. शो का पहला सीजन 2000 में शुरू हुआ था. टेलीविजन के इस मशहूर रिएलिटी क्?िज शो ने अपने पहले सीजन से ही दर्शकों को लुभाया है.

बता दें साल 2000 में पहले सीजन के बाद 2005 में दूसरा सीजन शुरू किया गया था. इसके बाद 2007 तक तीन सीजन ब्रॉडकास्ट करने के बाद 2010 में चौथा सीजन आया. 2010 के बाद से केबीसी का प्रसारण लगातार हर साल होता चला आ रहा है. इस दौरान शो के तीसरे सीजन को शाहरुख खान ने होस्ट किया था. बाकी सभी 9 सीजन और इस बार के 11वें सीजन को अमिताभ होस्ट करेंगे.

रवि किशन को गैंग्स ऑफ वासेपुर नहीं कर पाने का है अफसोस

बोले- एक अफवाह की वजह से अनुराग ने नहीं दिया मौका

कॉमेडी चैट शो द कपिल शर्मा शो में फिल्म बाटला हाउस की टीम नजर आएगी। जॉन अब्राहम, मृणाल ठाकुर और रवि किशन फिल्म के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी को लेकर बात करेंगे। शो पर रवि किशन ने इस बात का खुलासा किया कि अगर अनुराग कश्यप एक अफवाह पर ध्यान ना देते तो वो फिल्म का हिस्सा होते। इस बात का उन्हें अफसोस है कि वो फिल्म का हिस्सा नहीं बन पाए।

बाद में अनुराग ने मुक्काबाज में किया कास्ट

दरअसल, बातचीत के दौरान जब होस्ट कपिल शर्मा ने रवि किशन से पूछा कि अनुराग कश्यप उन्हें अपनी फिल्म में रखने में डर गए थे, इसके पीछे क्या वजह है? इस पर रवि ने बताया- हां, यह सच में मजेदार किस्सा है, लेकिन जब मुझे इसके कारण के बारे में पता चला तो मैं हैरान था। एक अफवाह जो चारों ओर बनी हुई है कि मैं एक ऐसा अभिनेता हूं जो सेट्स पर बहुत नखरे करता हूं और मुझे एक राजा की तरह व्यवहार करना पसंद है। यही अफवाह जब अनुराग के कानों में पड़ी तो उन्होंने मुझे अपनी फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर में कास्ट करने का विचार त्याग दिया। इसके बाद मैंने उनसे इस बारे बात की और उन्होंने मुझे अपनी फिल्म मुक्काबाज में लिया। वो आगे कहते हैं, अनुराग ने मुझे गैंग्स ऑफ वासेपुर के लिए कास्ट करना चाहा, लेकिन उन्होंने मुझे इस अफवाह की वजह से अप्रोच नहीं किया। उनके मन में मेरी कुछ और ही छवि थी। मुझे इसका बहुत अफसोस है क्योंकि मैं एक बेहतरीन फिल्म का हिस्सा नहीं बन पाया।

रवि ने आगे बताया कि इस शो में आने से वो लगभग 5 महीनों बाद हंस रहे हैं। एक्टर ने बताया - हाल ही में मैं संसद सदस्य के रूप में चुना गया और मैं ऑन-ग्राउंड चुनाव प्रचार में व्यस्त था। इसलिए बीते कुछ महीने व्यस्तता से भरे और थका देने वाले रहे हैं। आज इतने महीनों बाद मुझे हंसने का मौका मिला है।

मैडम तुसाद म्यूजियम में लगेगा श्रीदेवी का मोम का पुतला, सितंबर में होगा अनावरण

मंगलवार को दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी का 56वां जन्मदिन था। इस मौके पर सिंगापुर स्थित मैडम तुसाद म्यूजियम ने ऐलान किया है कि जल्द ही म्यूजियम में श्रीदेवी का पहला मोम का पुतला लगाया जाएगा। एक्ट्रेस की याद में ये बनाया गया है। म्यूजियम की ओर से मंगलवार को ट्वीट के जरिए इसकी जानकारी दी गई।

म्यूजियम की ओर से किए गए ट्वीट में लिखा गया- हमें ये बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि श्रीदेवी की याद में उनका मोम का पुतला लगाया जा रहा है। इसका अनावरण सितंबर के पहले सप्ताह में होगा।

बोनी हुए भावुक

श्रीदेवी को मिले इस सम्मान से उनके पति बोनी कपूर काफी खुश हैं। ट्विटर पर अपनी खुशी का इजहार करते हुए लिखा- मैं भावुक महसूस कर रहा हूं। हमें खुशी है कि मैडम तुसाद में श्रीदेवी की लीगेसी को जगह मिलेगी।

पुतले को दिया हवा-हवाई लुक

पुतले को 20 लोगों की एक्सपर्ट टीम ने तैयार किया है। इन आर्टिस्ट ने श्रीदेवी के परिवार और दोस्तों से बात कर उनके बारे में खास जानकारी इकट्ठा की। उनके एक्सप्रेशन, मेकअप और कपड़ों को रीक्रिएट किया गया। 1987 में आई फिल्म मिस्टर इंडिया के गाने हवा-हवाई में श्रीदेवी अलग अंदाज में नजर आई थी। उनके पुतले को उसी लुक में तैयार किया गया है। इस लुक के लिए मेकअप, ज्वैलरी, क्राउन और ड्रेस को खास 3डी प्रिंट दिया गया है। इसे कई टेस्ट के बाद पास किया गया।

श्रीदेवी के लिए खास मैसेज वॉल

पुतले के अलावा एक्ट्रेस की याद में एक दीवार भी तैयार की गई है, जहां फैंस एक्ट्रेस के लिए खास मैसेज लिख सकेंगे। पुतले को बेहद खास अंदाज में पेश किया जाएगा। श्रीदेवी से पहले अमिताभ बच्चन, ऐशवर्या राय बच्चन, करीना कपूर खान, सचिन तेंडुलकर, सलमान खान, शाहरुख खान, अनुष्का शर्मा, कटरीना कैफ और दीपिका पादुकोण का मोम का पुतला लगाया जा चुका है।

शादी से पहले सैफ़ और करीना ने घरवालों के सामने रखी थी ये बड़ी शर्त

सैफ़ के साथ ज़िंदगी बिताने के लिये करीना ने एक शर्त रखी थी। करीना ने शादी से पहले सैफ़ से कहा था कि वो शादी के भी आत्मनिर्भर रहना चाहती हैं। भले ही वो नवाब ख़ानदान से हैं। करीना कपूर की ये शर्त सुनकर सैफ़ ने तुरंत हामी भर दी। शादी के बाद सैफ़ को करीना के काम करने से कोई दिक्कत नहीं थी।

अभिनेता सैफ़ अली ख़ान अपनी पर्सनल लाइफ़ को लेकर अकसर ही सुर्ख़ियों में रहते हैं। फ़लिहाल सैफ़ लंदन में अपना 49वां जन्मदिन मना रहे हैं। ये जन्मदिन सैफ़ के लिये इसलिये भी ख़ास है, क्योंकि %सीक्रेड गेम्स सीज़न-2% में उनकी एक्टिंग की काफ़ी तारीफ़ें हो रही हैं। सैफ़ अली ख़ान ने जिस तरह से पहले सीज़न में लोगों का दिल जीता था। ठीक उसी तरह सीज़न-2 में भी उनका जलवा कायम है। ये, तो बात हुई सैफ़ की एक्टिंग की।

अब बात करते हैं उनकी लव लाइफ़ की, जो कि बेहद दिलचस्प और किसी फल्मि लव स्टोरी से कम नहीं है। सैफ़ को बेहद कम उम्र में अमृता सिंह से मोहब्बत हो गई थी। इसके बाद दोनों ने शादी करने का फ़ैसला लिया। हांलाकि, उनकी ये शादी कामयाब नहीं रही और दोनों कुछ साल बाद अलग हो गये। ये सबकुछ इनके फ़ैंस के लिये काफ़ी हैरान करने वाला था।

वहीं सैफ़ के अमृता से अलग होने की वजह इटली की मॉडल रोज़ा को बताया जा रहा था। ऐसा कहा गया कि सैफ़ रोज़ा के प्यार में थे, इसीलिये उन्होंने अमृता से तलाक लेने का निर्णय लिया। पर सैफ़ की ये लव स्टोरी भी ज़्यादा नहीं चली। इसके बाद सैफ़ की ज़िंदगी में करीना कपूर ने दस्तक दी। सैफ़ और करीना एक-दूसरे को डेट करने लगे, जिसके बाद दोनों ने शादी कर घर बसाने का निर्णय लिया। हांलाकि, सैफ़ के साथ ज़िंदगी बिताने के लिये करीना ने एक शर्त रखी थी। करीना ने शादी से पहले सैफ़ से कहा था कि वो शादी के भी आत्मनिर्भर रहना चाहती हैं। भले ही वो नवाब ख़ानदान से हैं। करीना कपूर की ये शर्त सुनकर सैफ़ ने तुरंत हामी भर दी। शादी के बाद सैफ़ को करीना के काम करने से कोई दिक्कत नहीं थी। जिसके बाद उन्होंने करीना से शादी कर अपनी ज़िंदगी शुरू की।

हांलाकि, इन दोनों के परिवार वाले इनकी शादी धूम-धाम कराना चाहते थे। पर सैफ़ और करीना बिना तामझाम के शादी करना चाहते थे। इसलिये इन्होंने अपने घरवालों से पहले ही कह दिया था कि अगर शादी सादगी से नहीं की गई, तो वो चुपके से शादी कर लेंगे। इसके बाद परिवार की रज़ामंदी से दोनों ने सादगी से शादी की।

सैफ अली खान की फिल्म 'लाल कप्तान' 11 अक्टूबर को रिलीज होगी

मुंबई।

फिल्म अभिनेता सैफ अली खान की एपिक ऐक्शन ड्रामा फिल्म ''लाल कप्तान'' 11 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। ''एनएच 10'' से प्रसिद्धि पाने वाले नवदीप सिंह ने इस फिल्म का निर्देशन किया है। यह फिल्म पहले छह सितंबर को रिलीज होनी थी। सैफ ने इस फिल्म में एक नगा साधु का किरदार निभाया है। सैफ शुक्रवार को 49 वर्ष के हो गए। 'इरोस इंटरनेशनल मीडिया लिमिटेड' के प्रबंध निदेशक सुनील लल्ला ने एक बयान में कहा, ''अभिनेता के रूप में सैफ फिल्म में प्रतिशोध और छल के विषयों को रेखांकित करते हैं। दर्शकों के लिए उनके जन्मदिन के अवसर पर फिल्म की रिलीज की तारीख की घोषणा करना बिल्कुल उपयुक्त समय है।'' फिल्मकार आनंद एल. राय ने अपने बैनर कलर येलो प्रोडक्शंस के माध्यम से इस फिल्म का निर्माण किया है। उन्होंने कहा, ''एक टीम के तौर पर सैफ के जन्मदिन पर लाल कप्तान की रिलीज की तारीख की घोषणा करते हुए हम खुश हैं।'' 'इरोस इंटरनेशनल मीडिया लिमिटेड' के प्रबंध निदेशक सुनील लल्ला ने एक बयान में कहा, ''अभिनेता के रूप में सैफ फिल्म में प्रतिशोध और छल के विषयों को रेखांकित करते हैं।

रेखा ने कभी श्रीदेवी की वजह से छोड़ी फिल्म, तो कभी उनकी आवाज बन पर्दे पर सुनाई दीं

वेटरन एक्ट्रेस रेखा ने पब्लिक प्लेटफॉर्म से हमेशा दिवंगत एक्ट्रेस श्रीदेवी की तारीफ की है। वो उनका बहुत सम्मान करती हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि श्रीदेवी की वजह से रेखा ने एक तमिल फिल्म छोड़ दी थी। इतना ही नहीं, उसके बाद कभी उन्होंने तमिल फिल्मों में काम भी नहीं किया। हम बात कर रहे हैं 1981 में रिलीज हुई डायरेक्टर जी. एन. रंगराजन की फिल्म मींदुम कोकिला की, जिसमें श्रीदेवी, कमल हासन और दीपा की मुख्य भूमिका थी।

श्रीदेवी वाला रोल चाहती थीं रेखा

रेखा ने फिल्म साइन की और शुरुआती कुछ सीन्स की शूटिंग भी कर ली थी। लेकिन वो श्रीदेवी के स्टारडम को लेकर डरी हुई थीं। कथिततौर पर फिल्म में वो वह किरदार निभाना चाहती थीं, जो श्रीदेवी को दिया गया था। लेकिन डायरेक्टर इसके लिए तैयार नहीं हुए। फाइनली, रेखा ने इसे छोड़ने का फैसला लिया और फिर कभी तमिल फिल्मों में काम भी नहीं किया। बाद में रेखा को एक्ट्रेस दीपा से रिप्लेस किया गया।

फिल्म से जुड़ा एक फैक्ट यह भी कि पहले इसे जे. महेंद्रन डायरेक्ट करने वाले थे। उन्होंने एक सॉन्ग सीक्वेंस शूट किया और फिर फिल्म से बाहर हो गए। फिर कमल हासन की रिक्वेस्ट पर जी. रंगराजन ने फिल्म की कमान अपने हाथ में ली थी।

रेखा की छोड़ी फिल्म ने श्रीदेवी को बनाया स्टार

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में श्रीदेवी को पहचान रेखा द्वारा छोड़ी गई फिल्म से मिली थी। बतौर लीड एक्ट्रेस श्रीदेवी की पहली हिंदी फिल्म सोलवां सावन (1979) थी। लेकिन उन्हें स्टार बनाया हिम्मतवाला (1983) ने। फिल्म के लीड एक्टर जितेंद्र ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया था कि इसके लिए रेखा पहली पसंद थीं। लेकिन किसी अन्य प्रोजेक्ट के चलते वो फिल्म नहीं कर सकीं।

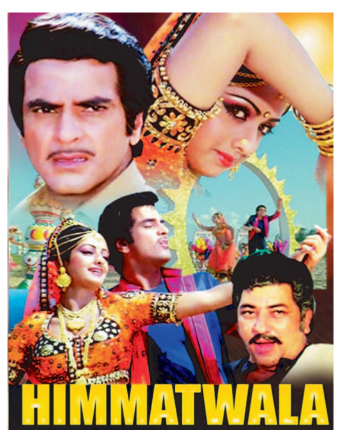

हिम्मतवाला

बकौल जितेंद्र, तब हमने नई लड़की को लॉन्च करने का फैसला लिया और बाकी सब जानते ही हैं। ऐसे इत्तेफाक इंडस्ट्री में अक्सर होते हैं। जितेंद्र ने 18 फिल्मों में श्रीदेवी और 30 फिल्मों में रेखा के साथ काम किया।

जब श्रीदेवी की आवाज बनी रेखा

श्रीदेवी साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री से बॉलीवुड में आई थीं। इसलिए शुरुआती कुछ सालों तक उनकी आवाज को डब किया गया। ज्यादातर फिल्मों में बेबी नाज ने उनकी आवाज को डब किया था। लेकिन 1986 में आई अमिताभ बच्चन स्टारर आखिरी रास्ता के लिए रेखा श्रीदेवी की आवाज बनी थीं। श्रीदेवी ने 1989 में आई चांदनी से अपनी आवाज खुद डब करनी शुरू की थी।

श्रीदेवी के आगे खुद को कम आंकती हैं रेखा

रेखा ने एक इंटरव्यू में कहा था, मैंने हमेशा उस लड़की (श्रीदेवी) को पसंद किया है। वह अपने आपमें एक चिंगारी थी। मेरा मानना है कि वैजयंतीमाला और हेमा मालिनी के बाद श्रीदेवी तमिल से हिंदी सिनेमा में आई तीसरी सुपरस्टार थीं। मुझे नहीं लगता कि इन एक्ट्रेसेस के बीच मैं अपने आपको कहीं पाती हूं। 13 अगस्त 1963 को जन्मी श्रीदेवी 24 फरवरी 2018 को दुनिया को अलविदा कह गईं। वो हिंदी सिनेमा की पहली महिला सुपरस्टार थीं।

धारा 370 की समाप्ति पर देशभक्त कश्मीरी का जवाब होगा

कोई दिक्कत नहीं

अखरोट की गिरी वहां एकदम नर्म और सफेद निकलती है, जो खाने में काफी स्वादिष्ट लगती है। वैसे इंदौर फोन लगाकर ड्रायफ्रूट के भाव पता किए तो श्रीनगर में ज्यादा थे। केशर भी इंदौर से अधिक महंगी थी। हां ए ग्रेड ताजा रसभरे सेब सिर्फ 40 रुपए किलो थे। सिंघाड़ा, जो हमारे यहां 50-60 रुपए किलो मिलता है, उसके भाव सुनकर चौंक जाना पड़ा- 600/- रुपए प्रति किलो! 50 ग्राम खाकर तृप्त हुए।

धारा 370 की समाप्ति के बाद ऐसा दर्शाया जा रहा है मानो हर कश्मीरी इससे काफी नाराज है, मगर हकीकत इससे काफी अलग है। असल कश्मीरी को इन सब बातों से कोई लेना-देना नहीं है। वह अपने काम-धंधे में मस्त है, उसे तो किसी भी बात से कोई दिक्कत नहीं है। अग्रवाल प्रोफेशनल ग्रुप इंदौर के 16 सदस्यों ने 18 से 25 सितंबर 2012 तक श्रीनगर एवं कश्मीर का प्रवास किया था और कश्मीरी लोगों को करीब से समझा भी। आइए जानते हैं इसी यात्रा वृत्तांत के बारे में...

सबसे पहले श्रीनगर के लाल चौक की बात करें। कल्पना ही नहीं थी कि लाल चौक भी अपने इंदौर के राजवाड़ा जैसा भरा-पूरा चहल-पहल वाला बाजार है, जहां गाड़ी पार्क करने की जगह के अलावा जरूरत की हर चीज मिल जाती है। तारीफ की बात यह भी है कि जब श्रीनगर के इस राजवाड़ा पर हमने खाऊ ठिये की तलाश की तो हमें शक्ति स्वीट्स पर गरमागरम समोसे और जलेबियां भी मिल गईं। ड्राय फरूट की दुकानें भी वहां काफी हैं।

अखरोट की गिरी वहां एकदम नर्म और सफेद निकलती है, जो खाने में काफी स्वादिष्ट लगती है। वैसे इंदौर फोन लगाकर ड्रायफरूट के भाव पता किए तो श्रीनगर में ज्यादा थे। केशर भी इंदौर से अधिक महंगी थी। हां ए ग्रेड ताजा रसभरे सेब सिर्फ 40 रुपए किलो थे। सिंघाड़ा, जो हमारे यहां 50-60 रुपए किलो मिलता है, उसके भाव सुनकर चौंक जाना पड़ा- 600/- रुपए प्रति किलो! 50 ग्राम खाकर तृप्त हुए।

तापमान ने श्रीनगर के पिछले 10-15 बरस के रिकॉर्ड तोड़ दिए। वहां इंदौर जैसी कड़क धूप निकली हुई थी। सुरक्षा व्यवस्था पूरे कश्मीर में चुस्त-दुरुस्त दिखी। कहीं भी देखने को नहीं मिला कि कोई जवान चाय की दुकान पर खड़ा टाइम पास कर रहा हो।

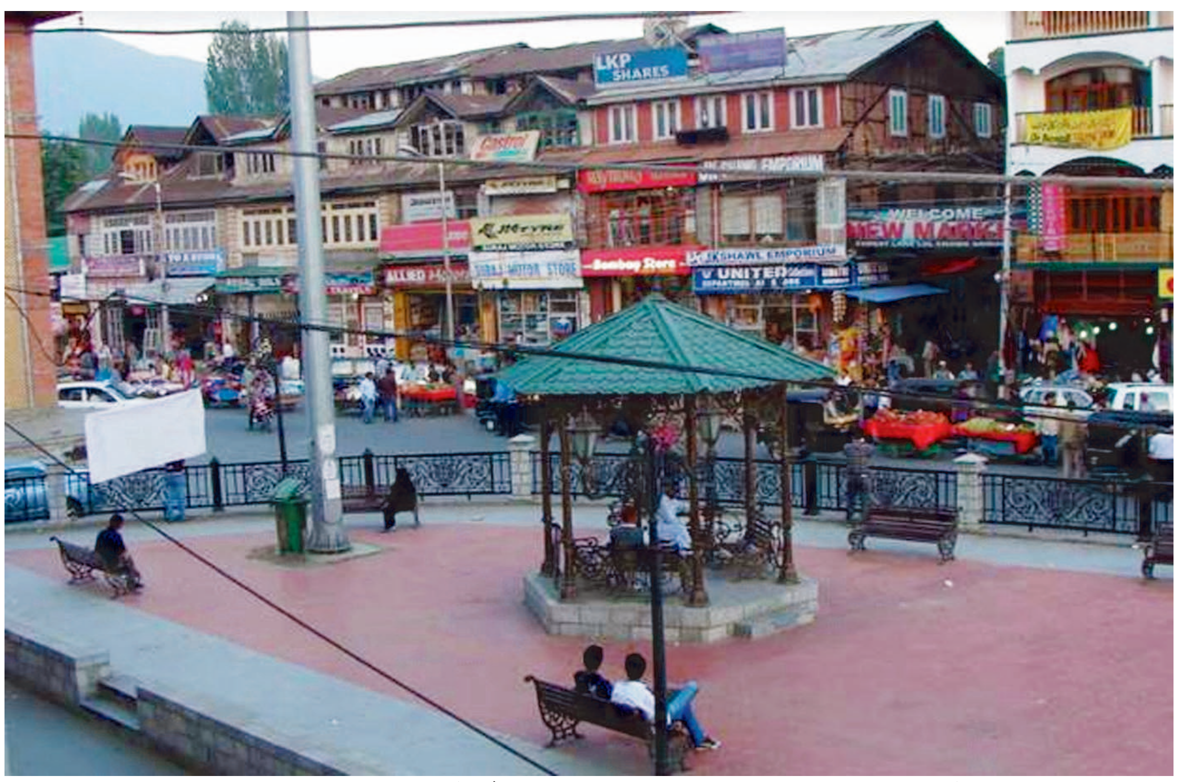

श्रीनगर पहुंचने पर फेरी वाले तथा हिल स्टेशन पहुंचने पर घोड़े वाले पर्यटकों को इस तरह घेर लेते हैं, जैसे कि प्रसिद्ध धर्मस्थलों पर पंडे। ठीक मोलभाव करने पर 100 रुपए की वस्तु 20-30 रुपए में मिल जाती है। हाथ से कशीदाकारी की गई शॉलें तथा लेडीज सूट बहुतायत से मिलते हैं। आर्टिफिशियल ज्वेलरी बेचने वाले पर्यटकों के पीछे हाथ धोकर पड़ जाते हैं और कुछ न कुछ बेचकर ही पीछा छोड़ते हैं।

इस मौसम में कश्मीर में बर्फ चाहे न मिले पर पूरी घाटी अथाह हरियाली लिए हुए मनोरम फूलों से लदी हुई है। पथरीली राह पर कल-कल बहते सफेद झरनों की सुंदरता देखते ही बनती है। शालीमार बाग, निशात बाग, शाही बाग काफी खूबसूरत हैं। गुलमर्ग में ठंड ठिठुराने वाली मिली। यहां गंडोले की सैर करना भी काफी रोमांचक है। पहलगाम सबसे अच्छा और सुंदर लगा। वहां ऑफ सीजन होने से होटल काफी सस्ते हैं।

डल लेक के हाउस बोट में 2 रात बिताना बहुत सुखद रहा। एक तो होटल के मुकाबले इनका किराया काफी कम होता है, दूसरे बेडरूम के अलावा अलग डायनिंग व ड्राइंग रूम घर जैसा माहौल देता है। खाना भी होटल के मुकाबले बहुत उम्दा होता है। डल लेक पहले जैसी साफ तो नहीं, पर बहता हुआ पानी नहीं होने के बावजूद वहां कोई बदबू नहीं थी जिसके बारे में हम डर रहे थे। दूर तक फैले अथाह जल के बावजूद मच्छर वहां एक भी नजर नहीं आया।

एक विशेष बात यह भी रही कि अलसुबह हाउस बोट पर नींद खुलने पर ओम नमः शिवाय का जाप काफी देर तक सुनाई देता रहा।

यहां डल लेक के बाच ही एक बड़ा मार्केट है, जहां पानी के बीच दुकानों की लाइन लगी हुई है। मात्र 300 रुपए चुकाकर 3-4 घंटे की शिकारों की सैर के साथ यहां जाया जा सकता है। शिकारों की यह सैर काफी शानदार होती है। इस सैर के दौरान आपको चलते-फिरते खाऊ ठिये जैसे कुल्फी, स्नेक्स आदि मिल जाते हैं। वाजिब कीमत पर वहां खरीदने लायक काफी कुछ है।

इंदौर से सीधे श्रीनगर एवं वापसी की फ्लाइट काफी सस्ती तथा समय बचाने वाली साबित हुई। वापसी में एयरपोर्ट पर जबरदस्त और तारीफेकाबिल सिक्योरिटी का इंतजाम है। 3 जगह से चेकिंग से गुजरना पड़ता है। खाने के बैग लगेज में भेज दिए गए। आधी बोतल पीने का पानी स्वयं से चखवाकर ले जाने दिया गया। विक्स इन्हेलर इन्हेल करवाकर देखा गया।

अंत में सभी कश्मीरवासियों का एक ही संदेश था कि अधिक से अधिक सैलानी कश्मीर में आएं और यह कि किसी भी सैलानी को कश्मीर में कोई तकलीफ नहीं होगी।

सैलानियों को हरसंभव खुश रखने के प्रयास में हर कश्मीरवासी की जुबान से एक ही तकियाकलाम सुनाई देता रहा कि कोई बात नहीं या कोई दिक्कत नहीं। वाकई लंबे-चौड़े बजट के बावजूद विकास की दौड़ में पिछड़े और आतंक की मार सहते कश्मीरी अवाम का जज्बा बस यही कहता लगता है कि कोई दिक्कत नहीं!